RNI NO.: RJHIN/26/A5495

निष्पक्ष निर्भीक जनहितकारी पत्रकारिता

www.brahmoskanayasavera.in
E-mail : brahmoskanayasavera@gmail.com

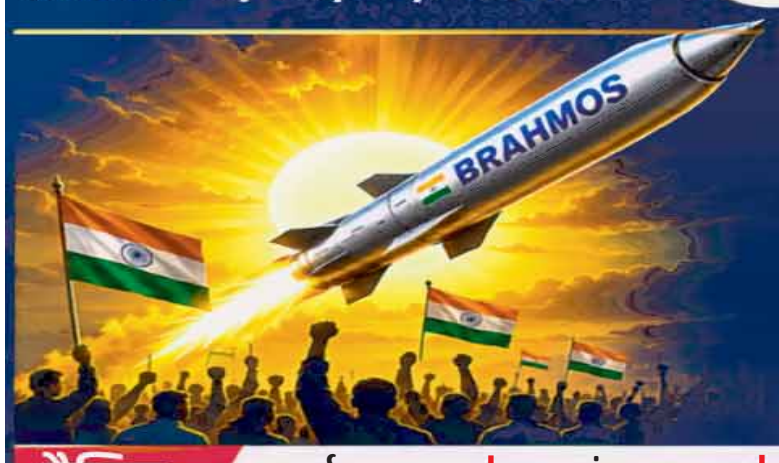

ब्रह्मोस का नया सवेरा

हम बनेंगे जनता की आवाज

दैनिक | वर्ष - 01 | अंक - 1 | राजस्थान, मंगलवार, 30 जून 2026 | कुल पृष्ठ: 4 | BrahmosKaNayaSavera

पत्रकार वार्ता नहीं होने से उठे सवाल मुख्यमंत्री के कार्यक्रम को लेकर बैतूल में चर्चाओं का दौर

मुख्यमंत्री मोहन यादव के बैतूल जिले के कुकरू दौरे के दौरान प्रस्तावित पत्रकार वार्ता नहीं होने से स्थानीय मीडिया और राजनीतिक हलकों में विभिन्न तरह की चर्चाएं शुरू हो गई हैं। कार्यक्रम स्थल पर पत्रकारों के लिए आवश्यक तैयारियां की गई थीं और कई मीडिया प्रतिनिधि भी मौजूद थे, लेकिन अंततः मुख्यमंत्री ने स्थानीय पत्रकारों से आमने-सामने बातचीत नहीं की। इससे पत्रकारों के बीच कई सवाल उठे हैं। डॉ. रामकिशोर दयाराम पवार ने दावा किया है कि पहले भी बैतूल जिले में पत्रकारों के सवालों को लेकर असहज स्थिति बनने के बाद मुख्यमंत्री निवास स्तर पर आमने-सामने पत्रकार वार्ता को लेकर सतर्कता बरती जा रही है। हालांकि, इस संबंध में प्रशासन या मुख्यमंत्री कार्यालय की ओर से कोई आधिकारिक पुष्टि या बयान सामने नहीं आया है। बताया गया कि कुकरू में आयोजित 'मन की बात' कार्यक्रम के बाद मुख्यमंत्री की पत्रकारों से बातचीत प्रस्तावित थी। इसी बीच स्थानीय स्तर पर यह चर्चा भी रही कि कार्यक्रम में कुछ बदलाव किए गए। इसके बाद मुख्यमंत्री ने दूरदर्शन और एएनआई को संक्षिप्त प्रतिक्रिया दी तथा यह कहते हुए रवाना हो गए कि प्रदेश अध्यक्ष मीडिया से बातचीत करेंगे। स्थानीय पत्रकार मुख्यमंत्री के संबोधन की प्रतीक्षा करते रहे। इस पूरे घटनाक्रम के बाद पत्रकारों और नागरिकों के बीच यह प्रश्न चर्चा का विषय बना हुआ है कि पत्रकार वार्ता किन कारणों से नहीं हो सकी। क्या इसके पीछे प्रशासनिक निर्णय, सुरक्षा व्यवस्था या कोई अन्य कारण था, इस पर अभी तक आधिकारिक स्थिति स्पष्ट नहीं हो सकी है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में मीडिया और जनप्रतिनिधियों के बीच संवाद को महत्वपूर्ण माना जाता है। ऐसे में स्थानीय पत्रकारों का कहना है कि यदि इस विषय पर शासन या प्रशासन की ओर से स्पष्ट जानकारी दी जाती है तो इससे सभी प्रकार की अटकलों पर विराम लग सकता है और पारदर्शिता तथा जनविश्वास को भी मजबूती मिलेगी।

रिफॉर्म्स पर दिल्ली में मंथन-पीएम मोदी ने क्यों बुलाई सभी सचिवों की बैठक क्या विकसित भारत पर होगी बात?

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने मंगलवार को केंद्र सरकार के सभी मंत्रालयों और विभागों के सचिवों की बैठक बुलाई है। सरकार का पूरा जोर देश में %ईज ऑफ लिविंग% यानी जीवन को आसान बनाने और %ईज ऑफ डूइंग बिजनेस% यानी व्यापार को सुगम बनाने पर है। सूत्रों के मुताबिक, बैठक में कई सचिव अपने-अपने मंत्रालयों के कामकाज, सुधारों की प्रगति और जन-केंद्रित कदमों का पूरा ब्यौरा पेश करेंगे। क्या भारत अपनी आजादी के 100 साल पूरे होने तक विकसित देश बन पाएगा? पीएम मोदी पहले ही साल 2047 तक भारत को विकसित राष्ट्र बनाने का लक्ष्य तय कर चुके हैं। इसी कड़ी में अब %नेक्स्ट-जेन रिफॉर्म्स% यानी अगली पीढ़ी के सुधारों की समीक्षा की जाएगी। पीएम मोदी का साफ निर्देश है कि सभी सचिव शासन और डिलीवरी पर ध्यान केंद्रित रखें। सरकारी कामों में, विशेषकर आम जनता से जुड़े मामलों में कोई ढिलाई या पेंडेंसी नहीं होनी चाहिए।

आर्थिक तरक्की और भावी रोडमैप की चुनौतियां

क्या देश की यह तेज आर्थिक रफ्तार आगे भी बरकरार रहेगी? इस उच्च स्तरीय बैठक में वित्तीय वर्ष 2025-26 के 7.7 प्रतिशत की जीडीपी विकास दर और चौथी तिमाही के 7.8 प्रतिशत के आंकड़ों पर भी गंभीर चर्चा होने की उम्मीद है। मजबूत घरेलू मांग और सरकारी खर्च के दम पर जनवरी-मार्च तिमाही में भारतीय अर्थव्यवस्था ने अनुमानों को पीछे छोड़ दिया है। एक साल पहले विकास दर 7 प्रतिशत थी, जो अब बढ़कर 7.8 प्रतिशत हो गई है। इसी तरह, पूरे साल की विकास दर भी वित्त वर्ष 2025 में 7.1 प्रतिशत से बढ़कर अब 7.7 प्रतिशत पर पहुंच गई है। इस पूरी कवायद को जमीन पर कौन उतारेगा? प्रधानमंत्री ने साफ कहा है कि मंत्रियों और अधिकारियों का एकमात्र उद्देश्य जनता के जीवन को आरामदायक बनाना होना चाहिए। मंगलवार को होने वाली इस महाबैठक में प्रधानमंत्री के दो प्रधान सचिव पी के मिश्रा और शक्तिकांत दास के साथ-साथ कैबिनेट सचिव टी वी सोमनाथन भी मौजूद रहेंगे। क्या सरकारी काम करने के तौर-तरीकों में अब बड़ा बदलाव आने वाला है? पीएम मोदी की सचिवों के साथ यह बैठक देश को 2047 तक विकसित बनाने और 7.7त्न की जीडीपी ग्रोथ को नई ऊंचाई पर ले जाने का एक बड़ा प्रशासनिक प्रयास है, जिसका सीधा असर आम जनता की जिंदगी और देश के कारोबार पर पड़ेगा।

पहली बार स्वदेशी तकनीक से वाणिज्यिक विमान ने की लैंडिंग

भारत की विमानन क्षेत्र ने एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है। इंडिगो के एयरबस ए320 विमान ने स्वदेशी रूप से विकसित गगन प्रणाली की मदद से सफलतापूर्वक उपग्रह आधारित लैंडिंग की है। यह प्रदर्शन उड़ान 27 जून को विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) की निगरानी में हुआ। यह पहली बार है, जब किसी वाणिज्यिक विमान ने इस स्वदेशी तकनीक से लैंडिंग की है।

अब तक विमान लैंडिंग के लिए आमतौर पर वाद्य यंत्र आधारित लैंडिंग प्रणाली का उपयोग होता है। इसमें हवाई अड्डे पर लगे जमीन आधारित उपकरण मदद करते हैं। लेकिन इस उड़ान में विमान ने उपग्रह आधारित लैंडिंग प्रणाली का इस्तेमाल किया। इससे पहले इंडिगो ने इस तकनीक को अपने एटीआर विमान पर आजमाया था। लेकिन यह पहली बार था, जब बड़े यात्री विमान ने इसे सफलतापूर्वक इस्तेमाल किया।

इस उड़ान में विमान को लैंडिंग के समय रनवे पर सही दिशा में सीधा रखने और सही ऊंचाई से धीरे-धीरे नीचे उतारने के लिए खास तकनीक का इस्तेमाल किया गया, जिससे लैंडिंग सुरक्षित और सटीक हुई। एयरबस के अनुसार, यह तकनीक वाद्य यंत्र आधारित लैंडिंग प्रणाली जैसी ही सटीकता देती है। लेकिन इसके लिए हवाई अड्डे पर भारी-भरकम उपकरण लगाने की जरूरत नहीं होती।यह उपलब्धि भारत की गगन प्रणाली को भी सामने लाती है, जो वैश्विक स्थान निर्धारण प्रणाली आधारित एक सुधार प्रणाली है। इसे भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) और भारतीय विमानपत्तन प्राधिकरण (एएआई) ने मिलकर विकसित किया है। यह प्रणाली वैश्विक स्थान निर्धारण प्रणाली संकेतों को और ज्यादा सटीक बनाती है और उसकी गलतियों को सुधारती है, ताकि विमान सुरक्षित तरीके से उड़ान भर सके और लैंडिंग कर सकें।

गगन खुद अलग से स्थान नहीं बताता, बल्कि वैश्विक स्थान निर्धारण प्रणाली की जानकारी को और बेहतर बनाता है। इसमें अंतरिक्ष में मौजूद उपग्रहों का उपयोग होता है, जो पूरे भारतीय हवाई क्षेत्र को कवर करते हैं। इससे विमान को लगातार और भरोसेमंद मार्गदर्शन मिलता रहता है।

सामान्य वैश्विक स्थान निर्धारण प्रणाली मोबाइल फोन में तो काम करती है। लेकिन विमान की लैंडिंग के लिए इतनी सटीकता पर्याप्त नहीं होती। इसके अलावा, वायुमंडलीय बदलावों से संकेत प्रभावित हो सकते हैं, खासकर भारत जैसे क्षेत्र में जहां सिग्नल में गड़बड़ी की संभावना रहती है। इसलिए विमानन के लिए ज्यादा सुरक्षित और सटीक प्रणाली की जरूरत होती है।

गगन इस समस्या को दूर करने के लिए देशभर में फैले 15 जमीन आधारित संदर्भ स्टेशनों से डाटा इकट्ठा करता है। ये स्टेशन वैश्विक स्थान निर्धारण प्रणाली की छोटी-छोटी गलतियों को पकड़कर उन्हें सुधारते हैं। फिर यह सही जानकारी नियंत्रण केंद्र से होकर उपग्रहों तक भेजी जाती है, जो उसे विमान तक पहुंचाते हैं।

इस प्रणाली की एक खास बात यह है कि यह लगातार सिग्नल की निगरानी करती है। अगर कोई गड़बड़ी होती है तो तुरंत पायलट को चेतावनी दे देती है। इससे उड़ान और लैंडिंग और भी सुरक्षित हो जाती है। विशेषज्ञों के अनुसार, यह तकनीक भारत में हवाई यात्रा को और सुरक्षित, तेज और बेहतर बनाने में मदद करेगी।

तीन रिहायशी छप्परों में लगी आग

कूरेभार थाना क्षेत्र के पिपरी साईनाथपुर मजरे भौसा गांव में शनिवार दोपहर आग लगने से तीन परिवारों के रिहायशी छप्पर जलकर राख हो गए। इस घटना में घरों में रखा गृहस्थी का सारा सामान भी नष्ट हो गया।

जानकारी के अनुसार, दोपहर करीब तीन बजे सबसे पहले मनोज कुमार के आवासीय छप्पर से धुआं उठता देखा गया। देखते ही देखते आग ने विकराल रूप ले लिया और विजयपाल तथा अरविंद कुमार पासवान के छप्परों को भी अपनी चपेट में ले लिया। आग की लपटें देखकर ग्रामीण तुरंत मौके पर पहुंचे। उन्होंने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया, जिससे एक बड़ा हादसा टल गया। आग लगने के कारणों का तत्काल पता नहीं चल सका है। घटना की सूचना मिलने पर राजस्व विभाग की टीम भी मौके पर पहुंची। हल्का लेखपाल राधेश्याम शुक्ला ने बताया कि आग से हुए नुकसान का आकलन किया जा रहा है। रिपोर्ट तैयार कर उच्चाधिकारियों को भेजी जाएगी, ताकि नियमानुसार पीड़ित परिवारों को सरकारी सहायता उपलब्ध कराई जा सके।

गृहस्थी का सामान जलकर राख, ग्रामीणों ने पाया काबू

सबरीमाला सोना गबन मामला-हाईकोर्ट ने दी पूर्व TDB अध्यक्ष के खिलाफ नए केस की अनुमति दी

केरल हाईकोर्ट ने सोमवार को सबरीमाला मंदिर से कथित तौर पर सोना गायब होने के मामले की जांच कर रही विशेष जांच टीम (एसआईटी) को नया आपराधिक मामला दर्ज करने की अनुमति दे दी। एसआईटी ने अदालत को बताया कि वर्ष 2025 में मंदिर के द्वारपालक (रक्षक देवता) की प्रतिमाओं पर दोबारा सोने की परत चढ़ाने के मामले में त्रावणकोर देवस्वम बोर्ड (टीडीबी) के पूर्व अध्यक्ष पी. एस. प्रशांत के खिलाफ सबूत मिले हैं।

न्यायमूर्ति राजा विजयराघवन वी और न्यायमूर्ति के. वी. जयकुमार की खंडपीठ ने कहा कि एसआईटी चाहे तो वर्ष 2025 में प्रतिमाओं पर दोबारा सोने की परत चढ़ाने के मामले में नया केस दर्ज कर सकती है या फिर अपने निष्कर्षों को वर्ष 2019 में सोना गायब होने के आरोपों की चल रही जांच में शामिल कर सकती है।

हाईकोर्ट में क्या बोली एसआईटी?

हाईकोर्ट के निर्देश पर एसआईटी का गठन किया गया था। उसे द्वारपालक प्रतिमाओं और श्रीकोविल (गर्भगृह) के सोने की परत चढ़े दरवाजों के चौखटों से कथित तौर पर सोना गायब होने के दो मामलों की जांच सौंपी गई थी। इन्हें वर्ष 2019 में दोबारा सोने की परत चढ़ाने के लिए चेन्नई ले जाया गया था। जांच अधिकारी एस. शशिधरन ने अदालत में विस्तृत रिपोर्ट दाखिल कर कहा कि जांच में ऐसे सबूत मिले हैं, जिनसे संकेत मिलता है कि कथित साजिश केवल मूल आरोपियों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसमें टीडीबी के अन्य अधिकारी और सदस्य भी शामिल थे। रिपोर्ट के मुताबिक, वर्ष 1998 में जिन द्वारपालक प्रतिमाओं पर सोने की परत चढ़ाई गई थी, उन्हें वर्ष 2019 में मुख्य आरोपी उन्नीकृष्णन पोट्टी के कहने पर चेन्नई भेजा गया।

कैसे हुआ सबरीमाला मंदिर के सोने का गबन?

रिपोर्ट में आरोप लगाया गया कि चेन्नई में दोबारा सोने की परत चढ़ाने की प्रक्रिया के दौरान प्रतिमाओं से मूल सोने की परत हटा दी गई। नई परत चढ़ाने के लिए केवल थोड़ी मात्रा में सोने का इस्तेमाल किया गया, जबकि बाकी सोने का कथित तौर पर गबन कर लिया गया। रिपोर्ट में यह भी आरोप लगाया गया कि काम की गुणवत्ता खराब होने के बावजूद संदेह से बचने के लिए झूठा प्रमाणपत्र जारी किया गया, जिसमें सोने की परत पर 40 साल की वारंटी होने का दावा किया गया। हालांकि, कुछ ही महीनों में परत खराब हो गई और उसके नीचे की तांबे की सतह दिखाई देने लगी।

एसआईटी ने बताया कौन-कौन थे शामिल?

एसआईटी के अनुसार, इसके बाद आरोपियों ने वर्ष 2019 में कथित तौर पर किए गए गबन को छिपाने के लिए एक और आपराधिक साजिश रची। इसके तहत नई सोने की परत चढ़ाने के नाम पर प्रतिमाओं को फिर से चेन्नई भेजने की योजना बनाई गई। एसआईटी का आरोप है कि नवंबर 2023 में पी. एस. प्रशांत के टीडीबी अध्यक्ष बनने के बाद उन्नीकृष्णन पोट्टी ने उनका विश्वास जीता और दोबारा सोने की परत चढ़ाने के प्रस्ताव को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें राजी किया।

मणिपुर में सुरक्षा बलों की बड़ी कार्रवाई- छह उग्रवादी गिरफ्तार

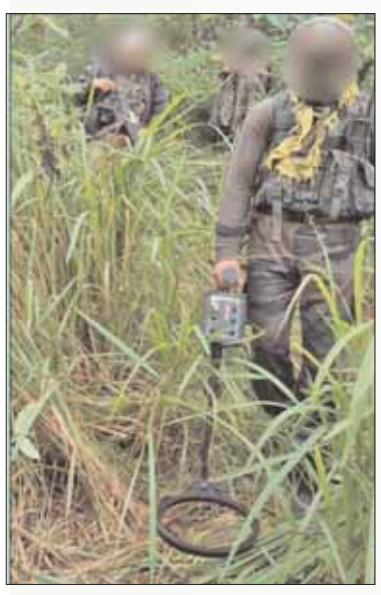

मणिपुर में उग्रवादी गतिविधियों के खिलाफ सुरक्षा बलों ने पिछले एक सप्ताह तक चले व्यापक संयुक्त अभियान में बड़ी सफलता हासिल की है। भारतीय सेना, असम राइफल्स, मणिपुर पुलिस और केंद्रीय सुरक्षा बलों ने पिछले एक सप्ताह में राज्य के पांच जिलों में खुफिया सूचनाओं के आधार पर अभियान चलाकर छह उग्रवादियों को गिरफ्तार किया। उनके पास से भारी मात्रा में हथियार, गोला-बारूद और विस्फोटक बरामद किए। रक्षा अधिकारियों के अनुसार, अभियान स्पीयर कोर के नेतृत्व में कांगपोकपी, इंफाल पश्चिम, इंफाल पूर्व, थौबल और काकचिंग जिलों में चलाया गया। गिरफ्तार किए गए उग्रवादी प्रतिबंधित संगठनों एसओआरईपीए, केसीपी (एन), केवाईकेएल और आरपीएफ (पीएलए) से जुड़े बताए गए हैं। इनमें एक स्वयंभू %कैप्टन% भी शामिल है। सबसे बड़ी बरामदगी कांगपोकपी जिले के लोइचिंग रिज, माओहिंग और नॉर्थ चांगौबुंग क्षेत्र में 24 और 26 जून को चलाए गए संयुक्त अभियान के दौरान हुई। असम राइफल्स, मणिपुर पुलिस और सीआरपीएफ की संयुक्त टीम ने यहां से हथियारों का बड़ा जखीरा बरामद किया। इसमें दो राइफल, एक कार्बाइन मशीन गन, एक अन्य राइफल, 42 देशी राइफलें, कई पिस्तौल, इम्प्रोवाइज्ड मोर्टार, पम्पी गन और एक अंडर बैरल ग्रेनेड लॉन्चर शामिल हैं। सुरक्षा बलों ने इसके अलावा कई ग्रेनेड, 250 से अधिक कारतूस, विस्फोटक सामग्री, संचार उपकरण तथा अन्य युद्धक सामग्री भी जब्त की। अधिकारियों का कहना है कि यह बरामदगी हाल के महीनों में राज्य में हथियारों की सबसे महत्वपूर्ण बरामदगियों में से एक मानी जा रही है। इसी दौरान इंफाल पश्चिम, इंफाल पूर्व, थौबल और काकचिंग जिलों में चलाए गए अलग-अलग अभियानों में छह सक्रिय उग्रवादियों को गिरफ्तार किया गया। तलाशी के दौरान एक पिस्तौल, 97 जीवित कारतूस, बारूद और एक बिना पंजीकरण वाला वाहन भी जब्त किया गया। सुरक्षा एजेंसियों का कहना है कि मणिपुर में शांति और सामान्य स्थिति बहाल करने के उद्देश्य से खुफिया आधारित अभियान लगातार जारी रहेंगे। अधिकारियों के अनुसार, उग्रवादी नेटवर्क, अवैध हथियारों की आवाजाही और हिंसक गतिविधियों पर प्रभावी नियंत्रण के लिए सेना, असम राइफल्स, मणिपुर पुलिस और केंद्रीय सुरक्षा बल आपसी समन्वय के साथ अभियान चला रहे हैं।प्रमुख बरामदगी -छह उग्रवादी गिरफ्तार। -प्रतिबंधित संगठनों एसओआरईपीए, केसीपी (एन), केवाईकेएल और आरपीएफ (पीएलए) के सदस्य शामिल। -दो राइफल, एक कार्बाइन मशीन गन, 42 देशी राइफलें, कई पिस्तौल और अंडर बैरल ग्रेनेड लॉन्चर बरामद। -कई ग्रेनेड, 250 से अधिक कारतूस, विस्फोटक और संचार उपकरण जब्त। -एक पिस्तौल, 97 कारतूस और बिना पंजीकरण का वाहन भी बरामद।

रूठता मानसून : प्रकृति की चेतावनी या मानव की भूल ?

भारत को सदियों से कृषि प्रधान देश कहा जाता रहा है और यहाँ की कृषि व्यवस्था का सबसे बड़ा आधार मानसून है। भारतीय जनजीवन में मानसून केवल एक मौसम नहीं, बल्कि आशा, विश्वास, समृद्धि और जीवन का पर्याय है। खेतों में लहलहाती फसलें, जल से भरते तालाब, झीलें और नदियाँ, किसानों के चेहरे पर लौटती मुस्कान तथा धरती की हरियाली–इन सबका संबंध सीधे मानसून से जुड़ा हुआ है। किंतु जब यही मानसून रूठ जाता है, तब केवल वर्षा की कमी नहीं होती, बल्कि जीवन के अनेक आयाम संकट में पड़ जाते हैं।

आज देश के अनेक भागों में मानसून का समय पर नहीं पहुँचना, असमान वर्षा होना, कहीं अतिवृष्टि तो कहीं अल्पवृष्टि जैसी स्थितियाँ लगातार बढ़ रही हैं। यह केवल मौसम का स्वाभाविक उतार-चढ़ाव नहीं, बल्कि बदलते पर्यावरण और जलवायु असंतुलन का गंभीर संकेत भी है। वैज्ञानिक वर्षों से चेतावनी दे रहे हैं कि यदि पृथ्वी का तापमान इसी प्रकार बढ़ता रहा, तो मानसून का स्वरूप और अधिक अनिश्चित होता जाएगा। प्रश्न यह है कि क्या वास्तव में मानसून रूठ गया है, या हमने स्वयं उसे रूठने के लिए विवश कर दिया है? अनियंत्रित औद्योगीकरण, अंधाधुंध वृक्षों की कटाई, नदियों और जलाशयों का अतिक्रमण, बढ़ता प्रदूषण, कंक्रीट के फैलते जंगल और प्राकृतिक संसाधनों का असीमित दोहन–ये सभी कारण प्रकृति के संतुलन को लगातार बिगाड़ रहे हैं। प्रकृति का अपना अनुशासन होता है; जब हम उसे बार-बार तोड़ते हैं, तो उसका दुष्परिणाम पूरे समाज को भुगतना पड़ता है। मानसून की बेरुखी का सबसे अधिक प्रभाव किसान पर पड़ता है। समय पर वर्षा न होने से बुवाई प्रभावित होती है, फसलें सूख जाती हैं और किसान कर्ज तथा आर्थिक संकट के दलदल में फँस जाता है। इसका असर केवल कृषि तक सीमित नहीं रहता, बल्कि खाद्यान्न उत्पादन, महँगाई, रोजगार, उद्योग और समूची अर्थव्यवस्था पर दिखाई देता है। शहरों में जल संकट गहराता है, भूजल स्तर तेजी से नीचे चला जाता है और पेयजल तक के लिए संघर्ष करना पड़ता है। विडंबना यह भी है कि जहाँ कहीं अत्यधिक वर्षा होती है, वहाँ बाढ़ जैसी आपदाएँ जनजीवन को अस्त-व्यस्त कर देती हैं। इससे स्पष्ट है कि समस्या केवल कम वर्षा की नहीं, बल्कि वर्षा के असंतुलित वितरण की भी है। यही जलवायु परिवर्तन का सबसे चिंताजनक स्वरूप है। समाधान केवल सरकारों के प्रयासों से संभव नहीं है। इसके लिए जनभागीदारी सबसे महत्वपूर्ण है। प्रत्येक नागरिक को जल संरक्षण, वर्षा जल संचयन, वृक्षारोपण, जल स्रोतों के संरक्षण और पर्यावरण के प्रति उत्तरदायी व्यवहार अपनाना होगा। गाँवों में परंपरागत तालाबों और बावड़ियों का पुनर्जीवन, शहरों में रेन वाटर हार्वेस्टिंग की अनिवार्यता तथा जल के विवेकपूर्ण उपयोग को जनआंदोलन बनाना समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है। शिक्षा व्यवस्था में भी पर्यावरणीय चेतना को व्यवहारिक रूप दिया जाना चाहिए। बच्चों और युवाओं को केवल पुस्तकीय ज्ञान ही नहीं, बल्कि प्रकृति संरक्षण के व्यावहारिक संस्कार भी दिए जाने चाहिए। मीडिया, सामाजिक संस्थाएँ और जनप्रतिनिधि भी इस दिशा में सकारात्मक वातावरण तैयार कर सकते हैं। भारत की संस्कृति सदैव प्रकृति के सम्मान की संस्कृति रही है। हमारे पर्व, परंपराएँ और जीवन-दर्शन जल, जंगल और जमीन के संरक्षण का संदेश देते हैं। आधुनिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित किए बिना भविष्य सुरक्षित नहीं हो सकता। यदि हम आज भी नहीं चेते, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें क्षमा नहीं करेंगी।

रूठता मानसून वस्तुतः प्रकृति का मौन संदेश है कि अब भी समय है–अपने विकास के मॉडल पर पुनर्विचार करें। यदि हमने प्रकृति के साथ सहअस्तित्व का मार्ग अपनाया, तो मानसून फिर से जीवनदायी बनकर लौटेगा; अन्यथा सूखा, बाढ़, जल संकट और पर्यावरणीय आपदाएँ हमारी नियति बन जाएँगी। आइए, हम सब संकल्प लें कि केवल वर्षा की प्रतीक्षा नहीं करेंगे, बल्कि ऐसी धरती भी बनाएँगे जहाँ वर्षा की प्रत्येक बूंद सुरक्षित रहे। यही भविष्य की सबसे बड़ी पर्यावरणीय, सामाजिक और राष्ट्रीय जिम्मेदारी है।

तुम मिली तो सफ़र ...इक कहानी बन गया

मैं तो मुसाफ़िर हूँ,ना किसी शहर का, ना किसी ठिकाने का,बस रास्तों का , दीवानों का,जो हर मोड़ पर खुद को थोड़ा-थोड़ा खोता है,

और हर मुलाक़ात में खुद को फिर से पा लेता है।

उस शाम आसमान जैसे किसी फिल्म का आख़िरी सीन बन गया था,हल्की बारिश के बाद की ठंडी हवा,भीगी सड़कों पर पड़ती पीली रोशनी,और दूर कहीं कोई पुराना गाना बज रहा था । मैं यूँ ही चलता-चलता एक छोटी-सी किताबों की दुकान तक पहुँच गया। दरवाज़ा आधा खुला था, जैसे कोई कहानी मेरा इंतज़ार कर रही हो।मैंने दरवाज़ा खोला और तुम सामने थीं। सफेद लिबास में,भीगे बालों की कुछ लटें चेहरे से चिपकी हुई,और आँखें,जिनमें पूरी एक दुनिया छुपी थी। उस पल,सच कहूँ तो वक्त रुक गया था।÷कुछ चाहिए?÷ तुमने धीरे से पूछा।मैंने तुम्हारी आँखों में देखते हुए कहा। ÷हाँ÷ शायद तुम्हारा थोड़ा-सा वक्त।÷तुम हल्का-सा मुस्कुराईं,और उस मुस्कान ने मेरे भीतर कुछ हमेशा के लिए बदल दिया। हम बातें करने लगे,पहले किताबों पर, फिर ज़िंदगी पर,फिर ख्वाबों पर और फिर एक-दूसरे पर।

तुम बोलती थीं और मैं बस सुनता था,क्योंकि तुम्हारी हर बात मेरे दिल पर लिखी जा रही थी।

तुमने कहा ÷प्यार शायद वो होता है,

जब कोई अजनबी भी अपना-सा लगने लगे÷, मैंने मुस्कुराकर जवाब दिया÷और शायद किस्मत वो होती है, जब वही अजनबी आपकी कहानी बन जाए÷

तुमने मेरी तरफ देखा,गहरी, सच्ची नज़रों सेज

और उस पल मुझे लगा,मैं अब मुसाफ़िर नहीं रहा,

मैं किसी का हो गया हूँ। बारिश फिर से शुरू हो गई थी,बूंदें खिड़की पर दस्तक दे रही थीं,और हमारे बीच खामोशी,जो हर लफ़्ज़ से ज़्यादा कुछ कह रही थी।मैंने धीरे से पूछा,÷अगर मैं रुक जाऊँ तो?÷ तुमने नज़रें झुका लीं और बहुत धीरे से कहा, ÷मुसाफ़िर रुक जाए तो कहानी खत्म हो जाती है÷

मेरे दिल में जैसे कुछ टूट गया,पर तुम्हारी आँखों में जो डर था,उसने मुझे रोक लिया।

वक्त ने फिर से अपनी चाल पकड़ ली,और मुझे जाना था। मैं दरवाज़े तक पहुँचा,फिर एक बार पलटकर तुम्हें देखा, तुम वहीं खड़ी थीं,पर इस बार तुम्हारी आँखों में आँसू थे,और होंठों पर एक अधूरी-सी मुस्कान।

मैं कुछ कहना चाहता था,शायद ÷रुक जाओ÷

या ÷मेरे साथ चलो÷,पर मुसाफ़िर सिर्फ महसूस करता है,कह नहीं पाता और मैं चला आया ।

मगर सच ये है कि मैं आज भी वहीं हूँ,उस दुकान में, उस बारिश में,तुम्हारी आँखों में ।

अब जब भी मैं लिखता हूँ,हर शब्द में तुम होती हो,हर कहानी में तुम्हारा जिक्र होता है क्योंकि तुम कोई मुलाक़ात नहीं थीं,तुम मेरी अधूरी मोहब्बत थीं ,और मैं,अब भी मुसाफ़िर हूँ,पर अब सफ़र में तन्हाई नहीं, तुम्हारी यादें साथ चलती हैं,जैसे कोई फिल्म,जो खत्म होकर भी दिल में चलती रहती है ।

आत्मविश्वास और ग्रह !

(ज्योतिष: जीवन पथ का विज्ञान ; भाग - 72)

पिछले भाग में हमने यह समझने का प्रयास किया कि गुरु का महत्व केवल ज्ञान प्रदान करने तक सीमित नहीं है, बल्कि वह व्यक्ति के भीतर विवेक, आत्मचिंतन और सही दिशा का प्रकाश भी जगाता है। सच्चा गुरु व्यक्ति को स्वयं पर विश्वास करना सिखाता है, न कि केवल दूसरों पर निर्भर रहना। इसी क्रम में अब हम जीवन की सबसे महत्वपूर्ण शक्तियों में से एक–आत्मविश्वास–और उसके ज्योतिषीय संदर्भ पर विचार करेंगे।

आत्मविश्वास का अर्थ अहंकार नहीं है। आत्मविश्वास वह आंतरिक विश्वास है, जो व्यक्ति को यह अनुभव कराता है कि वह अपने ज्ञान, परिश्रम और ईश्वर में आस्था के बल पर कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना कर सकता है। इसके विपरीत, अहंकार व्यक्ति को अपनी सीमाओं से अनभिज्ञ बना देता है, जबकि आत्मविश्वास व्यक्ति को अपनी क्षमताओं और सीमाओं–दोनों का यथार्थ बोध कराता है।ज्योतिषीय दृष्टि से आत्मविश्वास का संबंध मुख्य रूप से सूर्य से माना जाता है। सूर्य तेज, आत्मबल, नेतृत्व और आत्मसम्मान का प्रतीक है। यदि व्यक्ति के भीतर आत्मविश्वास संतुलित हो, तो वह निर्णय लेने में सक्षम होता है, उत्तरदायित्व निभाता है और चुनौतियों से भागने के बजाय उनका सामना करता है। किन्तु यदि यही भावना असंतुलित हो जाए, तो वह अहंकार या जिद का रूप भी ले सकती है।

यह समझना आवश्यक है कि ग्रह आत्मविश्वास प्रदान नहीं करते, बल्कि उसके संकेत और संभावनाएँ दर्शाते हैं। वास्तविक आत्मविश्वास व्यक्ति के ज्ञान, अनुभव, अनुशासन, सत्कर्म और निरंतर प्रयास से विकसित होता है। यही कारण है कि समान ग्रहयोग होने पर भी दो व्यक्तियों का जीवन भिन्न हो सकता है।

वास्तव में आत्मविश्वास का निर्माण छोटी-छोटी सफलताओं, नियमित अभ्यास और सकारात्मक अनुभवों से होता है। जब व्यक्ति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करता है, अपनी गलतियों से सीखता है और निरंतर स्वयं को बेहतर बनाने का प्रयास करता है, तब उसका आत्मविश्वास स्वाभाविक रूप से बढ़ता है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी आत्मविश्वास सफलता का एक महत्वपूर्ण आधार है। आत्मविश्वासी व्यक्ति असफलताओं से टूटता नहीं, बल्कि उन्हें सीखने का अवसर मानता है। वह आलोचना से निराश होने के बजाय आत्ममूल्यांकन करता है और आगे बढ़ने का प्रयास करता है। यही दृष्टिकोण उसे दीर्घकालीन सफलता की ओर ले जाता है।

एक सामान्य भ्रान्ति यह है कि यदि किसी की कुंडली में ग्रह प्रतिकूल हों, तो वह जीवन में आत्मविश्वासी नहीं बन सकता। जबकि वास्तविकता यह है कि आत्मविश्वास एक विकसित किया जाने वाला गुण है। उचित शिक्षा, अच्छा वातावरण, सत्संग, अनुशासित जीवन, सकारात्मक सोच और निरंतर पुरुषार्थ से कोई भी व्यक्ति अपने आत्मबल को सुदृढ़ कर सकता है।

ज्योतिष का सकारात्मक पक्ष यही है कि वह व्यक्ति को उसकी संभावनाओं का बोध कराता है। यदि किसी ग्रह की स्थिति चुनौतीपूर्ण हो, तो उसका उद्देश्य व्यक्ति को सावधान करना है, हतोत्साहित करना नहीं। ज्योतिष का सही उपयोग व्यक्ति के भीतर आत्मबल जगाने के लिए होना चाहिए, न कि भय उत्पन्न करने के लिये। यह भी सत्य है कि आत्मविश्वास और ईश्वर में आस्था एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं। वास्तविक आस्था व्यक्ति को विनम्र बनाती है और आत्मविश्वास उसे कर्मशील बनाता है। जब दोनों का संतुलन स्थापित होता है, तब व्यक्ति बिना भय के, परंतु बिना अहंकार के भी, अपने जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि आत्मविश्वास जीवन की सबसे बड़ी आंतरिक शक्तियों में से एक है। ग्रह उसकी प्रवृत्तियों का संकेत दे सकते हैं, किन्तु उसे विकसित करना व्यक्ति के अपने पुरुषार्थ, अनुशासन और सतत प्रयास पर निर्भर करता है। यही संतुलित दृष्टिकोण हमें यह सिखाता है कि ज्योतिष का उद्देश्य भाग्य पर निर्भर बनाना नहीं, बल्कि आत्मविश्वास के साथ कर्मपथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देना है। जब आत्मबल जागृत होता है, तब ग्रहों के संकेत भी व्यक्ति के विकास के साधन बन जाते हैं।

क्रमशः

कबीर : भारतीय चेतना का शाश्वत स्वर !

भारतीय सभ्यता की सबसे बड़ी विशेषता उसकी समावेशी चेतना रही है। यहाँ विचारों का वैभव है, मतों की विविधता है, आस्थाओं की अनेक धाराएँ हैं, फिर भी इनके केंद्र में मनुष्य और मानवता का भाव विद्यमान है। इसी भारतीय चेतना को शब्द देने वाले महापुरुषों में संत कबीर का स्थान अद्वितीय है। वे केवल भक्तिकाल के कवि नहीं, बल्कि भारतीय समाज की आत्मा के स्वर हैं। उनकी वाणी किसी एक धर्म, जाति, संप्रदाय या युग की नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता की धरोहर है। यही कारण है कि लगभग छह शताब्दियों बाद भी कबीर उतने ही प्रासंगिक हैं, जितने अपने समय में थे।

कबीर ऐसे दौर में प्रकट हुए जब भारतीय समाज अनेक प्रकार की विडंबनाओं से घिरा हुआ था। जातिगत ऊँच-नीच, धार्मिक कट्टरता, कर्मकांड, सामाजिक असमानता और राजनीतिक अस्थिरता ने समाज को विभाजित कर दिया था। मनुष्य की पहचान उसके कर्म और चरित्र से नहीं, बल्कि उसकी जाति और धार्मिक पहचान से निर्धारित होने लगी थी। कबीर ने इसी व्यवस्था को चुनौती दी। उन्होंने किसी व्यक्ति का नहीं, बल्कि उस मानसिकता का विरोध किया जो मनुष्य को मनुष्य से अलग करती है।

उनका प्रसिद्ध दोहा–

÷जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का, पड़ा रहन दो म्यान।।÷

आज भी भारतीय लोकतंत्र और संविधान की मूल भावना को अभिव्यक्त करता है। यह केवल सामाजिक समता का संदेश नहीं, बल्कि योग्यता, ज्ञान और कर्म पर आधारित समाज की परिकल्पना है।

कबीर भारतीय चेतना के इसलिए भी शाश्वत स्वर हैं क्योंकि उन्होंने धर्म को विभाजन का नहीं, आत्मबोध का माध्यम माना। उन्होंने मंदिर और मस्जिद दोनों का सम्मान किया, लेकिन ईश्वर को किसी भवन या प्रतीक में सीमित नहीं किया। उनका आग्रह था कि ईश्वर बाहर नहीं, मनुष्य के भीतर है। वे कहते हैं–

÷मोको कहाँ ढूँढे रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।÷

यह संदेश भारतीय दर्शन की उस परंपरा का विस्तार है, जो आत्मा में परमात्मा के दर्शन करती है। कबीर ने धर्म को कर्म, प्रेम और सत्य से जोड़ा। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि पूजा-पाठ, व्रत-उपवास और बाहरी आडंबर तब तक अधूरे हैं, जब तक मनुष्य के भीतर करुणा, सत्य और विनम्रता का भाव नहीं जागता।

आज जब दुनिया धार्मिक संघर्षों, कट्टरता और असहिष्णुता से जूझ रही है, तब कबीर की वाणी केवल भारत ही नहीं, पूरी मानवता के लिए आशा का संदेश बनकर सामने आती है। वे हमें याद दिलाते हैं कि धर्म का उद्देश्य मनुष्यों के बीच दीवारें खड़ी करना नहीं, बल्कि दिलों के बीच पुल बनाना है।

भारतीय संस्कृति सदैव संवाद की संस्कृति रही है। यहाँ प्रश्न पूछना भी परंपरा है और उत्तर खोजते रहना भी। कबीर ने इसी परंपरा को आगे बढ़ाया। उन्होंने समाज की रूढ़ियों पर तीखे प्रश्न उठाए, किंतु उनके भीतर कटुता नहीं थी। उनका विद्रोह विनाश का नहीं, निर्माण का विद्रोह था। वे व्यवस्था बदलना चाहते थे, समाज तोड़ना नहीं।

आज सूचना क्रांति के युग में ज्ञान के स्रोत बढ़े हैं, लेकिन विवेक का संकट भी उतना ही गहरा हुआ है। सोशल मीडिया पर अफवाहें, नफरत और असत्य पहले से कहीं अधिक तेजी से फैलते हैं। ऐसे समय में कबीर का यह संदेश विशेष रूप से प्रासंगिक हो उठता है–

÷साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।÷

यह केवल आध्यात्मिक शिक्षा नहीं, बल्कि लोकतंत्र, पत्रकारिता और सार्वजनिक जीवन का मूल सिद्धांत है। यदि सत्य कमजोर पड़ जाएगा, तो समाज का विश्वास भी टूट जाएगा।

कबीर का एक और महत्वपूर्ण पक्ष श्रम और आत्मनिर्भरता का सम्मान है। वे स्वयं जुलाहा थे। उन्होंने कभी श्रम को छोटा नहीं माना। भारतीय संस्कृति में श्रम को पूजा माना गया है और कबीर ने इसे अपने जीवन से सिद्ध किया। आज जब युवा वर्ग सफलता के त्वरित मार्ग तलाश रहा है, तब कबीर का जीवन बताता है कि कर्म, अनुशासन और ईमानदारी ही स्थायी सफलता का आधार हैं।

भारतीय चेतना केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक भी है। इसमें प्रकृति के प्रति संवेदना, परिवार के प्रति उत्तरदायित्व और समाज के प्रति समर्पण निहित है। कबीर इन सभी मूल्यों को अपनी वाणी में सहज रूप से स्थापित करते हैं। उनका प्रसिद्ध दोहा–

÷साईं इतना दीजिए, जामे कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ, साधु न भूखा जाय।।÷

आज के उपभोक्तावादी और असीमित इच्छाओं से भरे समाज के लिए एक गहरा नैतिक संदेश है। यह संतोष का दर्शन है, सामाजिक न्याय का दर्शन है और संसाधनों के संतुलित उपयोग का भी दर्शन है।

नई शिक्षा नीति भारतीय ज्ञान परंपरा को शिक्षा के केंद्र में लाने की बात करती है। यह स्वागतयोग्य प्रयास है। किंतु भारतीय ज्ञान परंपरा केवल ग्रंथों तक सीमित नहीं है; वह कबीर, तुलसी, नानक, बुद्ध और विवेकानंद जैसे महापुरुषों के विचारों में भी जीवित है। यदि नई पीढ़ी को केवल सूचना नहीं, बल्कि मूल्य भी देने हैं, तो कबीर की वाणी को जीवन-दृष्टि के रूप में स्वीकार करना होगा।

यह भी विचारणीय है कि आज विकास की चर्चा अधिक होती है, लेकिन संस्कारों की चर्चा कम होती है। आर्थिक प्रगति आवश्यक है, वैज्ञानिक उपलब्धियाँ भी अनिवार्य हैं, परंतु यदि समाज में करुणा, संवेदना और नैतिकता का ह्रास होने लगे तो विकास अधूरा रह जाता है। कबीर हमें याद दिलाते हैं कि सभ्यता की पहचान उसकी इमारतों से नहीं, उसके मनुष्यों के चरित्र से होती है।

भारत आज विश्व मंच पर नई भूमिका निभाने की ओर अग्रसर है। यदि वह वास्तव में विश्व को शांति, सह-अस्तित्व और मानवता का संदेश देना चाहता है, तो उसे अपनी उसी सांस्कृतिक विरासत से शक्ति ग्रहण करनी होगी, जिसके प्रतिनिधि संत कबीर हैं। उनकी वाणी में भारतीयता का सार है–समरसता, सत्य, श्रम, प्रेम और आत्मबोध।

कबीर को केवल जयंती पर स्मरण कर लेना पर्याप्त नहीं है। आवश्यकता इस बात की है कि उनकी चेतना हमारे सामाजिक व्यवहार, शिक्षा, राजनीति, मीडिया और सार्वजनिक जीवन का हिस्सा बने। जब हम जाति से पहले मनुष्य को, धर्म से पहले मानवता को और मतभेद से पहले संवाद को महत्व देंगे, तभी कबीर का भारत साकार होगा। भारतीय चेतना की सबसे बड़ी शक्ति उसकी विविधता में निहित एकता है, और इस एकता को सबसे प्रभावशाली स्वर यदि किसी ने दिया है, तो वह संत कबीर हैं। इसलिए कबीर केवल इतिहास के संत नहीं, बल्कि भारत के वर्तमान और भविष्य की भी सबसे सशक्त आवाज़ हैं।

बढ़ते तापमान पर मौसम वैज्ञानिकों,पर्यावरण विदों की चिंता

मौसम वैज्ञानिकों का मानना है कि पृथ्वी का औसत तापमान औद्योगिक क्रांति के पहले की तुलना में लगभग 1.2 से 1.3 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका है। यदि तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस से अधिक बढ़ा, तो इसके परिणाम भयावह होंगे। यह केवल मौसम का परिवर्तन नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के अस्तित्व का प्रश्न है।

संयुक्त राष्ट्र के महासचिव एंटोनियो गटरेस ने चेतावनी देते हुए कहा है कि

÷मानवता ग्लोबल वार्मिंग के युग से निकलकर ग्लोबल बॉयलिंग के दौर में प्रवेश कर चुकी है।÷यह कथन अतिशयोक्ति नहीं, बल्कि आज की वास्तविकता है। वर्ष-दर-वर्ष नए तापमान रिकॉर्ड बन रहे हैं। भारत सहित विश्व के अनेक देशों में 48 से 50 डिग्री सेल्सियस तक तापमान पहुँच चुका है। इससे लाखों लोगों का स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है। विश्वप्रसिद्ध पर्यावरण वैज्ञानिक जेम्स हैंडसेन जिन्हें ग्लोबल वार्मिंग पर प्रारंभिक चेतावनी देने वाले वैज्ञानिकों में अग्रणी माना जाता है, कहते हैं जलवायु परिवर्तन भविष्य की समस्या नहीं है, यह आज की वास्तविकता है। वास्तव में, बढ़ता तापमान केवल गर्मी नहीं बढ़ा रहा, बल्कि हमारी खाद्य सुरक्षा, जल सुरक्षा और स्वास्थ्य पर भी गंभीर संकट उत्पन्न कर रहा है। खेतों की उत्पादकता घट रही है, जलस्रोत सूख रहे हैं और वायु प्रदूषण के कारण श्वसन रोग तेजी से बढ़ रहे हैं। धरती तप रही, हिमालय की चोटियाँ पिघल रही, समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है, जंगल धधक रहे हैं और मौसम का स्वभाव अनिश्चित होता जा रहा है। कभी भीषण गर्मी, कभी बेमौसम वर्षा, कभी सूखा तो कभी विनाशकारी बाढ़–ये सब प्रकृति की चेतावनी हैं कि यदि मानव ने अभी भी अपनी जीवनशैली नहीं बदली, तो वह दिन दूर नहीं जब साँस लेने के लिए शुद्ध हवा भी दुर्लभ हो जाएगी।

सबसे चिंताजनक तथ्य यह है कि विश्व के अनेक महानगरों में वायु की गुणवत्ता लगातार गिर रही है। यदि यही स्थिति बनी रही तो आने वाले समय में स्वच्छ हवा भी बोतलों में खरीदनी पड़ेगी। आज कई देशों में ऑक्सीजन बार और शुद्ध हवा बेचने वाले उद्योग प्रारंभ हो चुके हैं। यह मानव विकास नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ हमारे असंतुलित संबंध का परिणाम है।

प्रसिद्ध पर्यावरणविद् सुनीता नरेंन कहती है जलवायु परिवर्तन केवल पर्यावरण का नहीं, बल्कि विकास और न्याय का भी प्रश्न है। सबसे अधिक पीड़ा उन लोगों को झेलनी पड़ती है जिन्होंने प्रदूषण सबसे कम फैलाया है।

यह कथन भारत जैसे विकासशील देशों पर पूरी तरह लागू होता है। गरीब किसान, मजदूर, आदिवासी और ग्रामीण समाज सबसे पहले जलवायु परिवर्तन का दंश झेल रहे हैं। पर्यावरण संरक्षण के लिए जीवन समर्पित करने वाली वंदना शिवा का स्पष्ट मत है कि हमारी आवश्यकता पूरी कर सकती है, लेकिन हमारे लालच को कभी नहीं।

वास्तव में, अंधाधुंध औद्योगीकरण, जंगलों की कटाई, जीवाश्म ईंधनों का अत्यधिक उपयोग और अनियंत्रित शहरीकरण ने पृथ्वी का प्राकृतिक संतुलन बिगाड़ दिया है। कार्बन डाइऑक्साइड, मीथेन और अन्य ग्रीनहाउस गैसें वातावरण में लगातार बढ़ रही हैं, जिससे पृथ्वी का तापमान तेजी से ऊपर जा रहा है।

आज आवश्यकता केवल सरकारों की नीतियों की नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक की भागीदारी की है। एक पेड़ लगाना, प्लास्टिक का कम उपयोग करना, सार्वजनिक परिवहन अपनाना, ऊर्जा की बचत करना और जल संरक्षण करना–ये छोटे-छोटे कदम मिलकर बड़ा परिवर्तन ला सकते हैं।

स्वीडन की युवा पर्यावरण कार्यकर्ता ग्रेटा थनबर्ग ने विश्व नेताओं को चेताते हुए कहा है कि

÷हमारा घर जल रहा है, और मैं चाहती हूँ कि आप उसी तरह घबराएँ जैसे किसी घर में आग लगने पर घबराते हैं।÷

यह केवल एक युवती की भावनात्मक अपील नहीं, बल्कि पूरी मानवता की पुकार है।

भारत की परंपरा सदैव प्रकृति-पूजक रही है। हमारे ऋषियों ने पृथ्वी को माता, नदियों को देवी और वृक्षों को जीवनदाता माना। यदि हम अपनी सांस्कृतिक विरासत से प्रेरणा लें तो पर्यावरण संरक्षण हमारे जीवन का सहज हिस्सा बन सकता है।

आज विश्व को आर्थिक विकास और पर्यावरण संरक्षण के बीच संतुलन स्थापित करना होगा। विकास वह नहीं जो जंगलों को समाप्त कर दे, नदियों को प्रदूषित कर दे और हवा को विषैला बना दे। वास्तविक विकास वही है जो आने वाली पीढ़ियों के लिए भी सुरक्षित और स्वस्थ पृथ्वी छोड़ जाए।

अंततः यह स्मरण रखना होगा कि पृथ्वी को हमारी आवश्यकता नहीं है; हमें पृथ्वी की आवश्यकता है। यदि हमने समय रहते चेतावनियों को नहीं समझा, तो भविष्य की पीढ़ियाँ हमें क्षमा नहीं करेंगी। आज लिया गया प्रत्येक पर्यावरणीय निर्णय कल की साँसों का आधार बनेगा। आइए संकल्प लें धरती को केवल विरासत में नहीं, बल्कि उत्तरदायित्व के रूप में देखें। एक वृक्ष लगाएँ, एक जीवन बचाएँ; क्योंकि यदि हवा नहीं बचेगी, तो मानव सभ्यता भी नहीं बचेगी।

बुजुर्गों के वास्ते रामबाण टिप्स !

मुझे यह इतना दिलचस्प लगा कि अगर आप इसे नहीं पढ़ेंगे तो बहुत अफ़सोस होगा।कई बीमारियाँ असल में बीमारियाँ नहीं, बल्कि उम्र बढ़ने की सामान्य प्रक्रिया हैं। एक हॉस्पिटल डायरेक्टर ने बुजुर्गों को ये टिप्स दिए आप बीमार नहीं हैं, आपकी उम्र बढ़ रही है। कई स्थितियाँ जिन्हें आप बीमारी समझते हैं, वे बीमारी नहीं हैं। वे इस बात के संकेत हैं कि आपका शरीर बूढ़ा हो रहा है।याददाश्त कमज़ोर होना अल्जाइमर नहीं है; यह उम्र बढ़ने के साथ दिमाग का खुद को बचाने का एक तरीका है। यह दिमाग का बूढ़ा होना है, कोई बीमारी नहीं। अगर आप भूल जाते हैं कि आपने चाबियाँ कहाँ रखी थीं, लेकिन उन्हें खुद ढूँढ लेते हैं, तो यह डिमेंशिया नहीं है।धीरे चलना और पैरों का लड़खड़ाना लकवा (पैरालिसिस) नहीं है, बल्कि मांसपेशियों का कमज़ोर होना है। इसका समाधान दवा लेना नहीं, बल्कि लगातार चलते-फिरते रहना है।अनिद्रा,नींद न आना, कोई बीमारी नहीं है; यह दिमाग का अपनी लय को एडजस्ट करना है। यह नींद के पैटर्न में बदलाव है। नींद की गोलियाँ न लें। नींद की गोलियों और नींद लाने वाली दूसरी चीज़ों पर लंबे समय तक निर्भर रहने से गिरने और सोचने-समझने की क्षमता कम होने का खतरा बढ़ जाता है। बुजुर्गों के लिए अच्छी नींद का सबसे अच्छा उपाय है दिन में ज़्यादा धूप लेना और सोने का एक रेगुलर शेड्यूल बनाए रखना।शरीर में दर्द होना गठिया (रूमेटिज़्म) नहीं है, बल्कि नर्वस सिस्टम के बूढ़े होने की सामान्य प्रतिक्रिया है। कई बुजुर्ग कहते हैं, ÷मेरे हाथ-पैरों में हर जगह दर्द होता है। क्या यह गठिया है या हड्डियों का बढ़ना (बोन हाइपरप्लासिया)?÷ हड्डियाँ ढीली और पतली हो जाती हैं, लेकिन निन्यानवे प्रतिशत÷शरीर का दर्द÷ कोई बीमारी नहीं है, बल्कि नसों में सिग्नल धीरे पहुँचने के कारण दर्द बढ़ जाता है। इसे %सेंट्रल सेंसिटाइज़ेशन% कहते हैं, जो बुजुर्गों में होने वाला एक आम शारीरिक बदलाव है। इसका इलाज एक्सरसाइज़ है, दवा नहीं।हाई कोलेस्ट्रॉल। बुजुर्गों में कोलेस्ट्रॉल का लेवल थोड़ा ज़्यादा होता है क्योंकि वे ज़्यादा समय तक जीवित रहे हैं। कोलेस्ट्रॉल हार्मोन और सेल मेम्ब्रेन बनाने के लिए ज़रूरी कच्चा माल है। कोलेस्ट्रॉल का लेवल बहुत कम होने से इम्यूनिटी आसानी से कम हो सकती है। बुजुर्गों में ब्लड प्रेशर कम करने के लिए गाइडलाइन 150से90 है, न कि कम उम्र के लोगों के लिए 140से90 का स्टैंडर्ड। उम्र बढ़ने को बीमारी न समझें।उम्र बढ़ना कोई बीमारी नहीं है; यह एक ऐसी यात्रा है जिसे हमें तब तक एन्जॉय करना चाहिए जब तक हम कर सकते हैं। बुजुर्गों और उनके बच्चों के लिए कुछ बातें याद रखें कि हर तकलीफ़ बीमारी नहीं होती।कई बुजुर्ग डरने से घबराते हैं। मेडिकल जांच की रिपोर्ट से डरें नहीं और न ही विज्ञापनों के बहकावे में आएं।बच्चों के लिए सबसे ज़रूरी बात यह है कि वे अपने माता-पिता को सिर्फ़ अस्पताल न ले जाएं, बल्कि उनके साथ टहलने जाएं, धूप सेंकने, खाना खाने, बातचीत करने और उनसे जुड़ने के लिए समय निकालें।उम्र बढ़ना कोई दुश्मन नहीं है। यह बस यह कहने का एक और तरीका है कि ÷मैं थोड़ा और जीना चाहता हूं।÷ लेकिन ठहराव (एक ही जगह रुक जाना) दुश्मन है! स्वस्थ रहें।एक कैंसर विशेषज्ञ (ऑन्कोलॉजिस्ट) ने कहा अधेड़ उम्र पचास साल से शुरू होती है और सत्तर साल पर खत्म होती है।सुनहरी उम्र (गोल्डन एज)सत्तर साल से शुरू होती है और अस्सी साल पर खत्म होती है।बुढ़ापा अस्सी साल से शुरू होता है और नब्बे साल पर खत्म होता है।लंबी उम्र का दौर नब्बे साल से शुरू होता है और मौत के साथ खत्म होता है। बुजुर्गों के लिए सबसे बड़ी समस्या अकेलापन है।

जीवनसाथी आमतौर पर एक साथ नहीं मरते; उनमें से कोई एक पहले चला जाता है। किसी न किसी मोड़ पर, विधवा या विधुर अपने परिवार पर बोझ बन जाते हैं। इसीलिए दोस्तों से संपर्क बनाए रखना, मिलना-जुलना और अक्सर बातचीत करना बहुत ज़रूरी है, ताकि आप अपने बच्चों और पोते-पोतियों पर बोझ न बनें।वे शायद आपको यह कभी बताएंगे नहीं। मेरी निजी सलाह है कि अपनी ज़िंदगी पर अपना कंट्रोल न खोएं। इसका मतलब है यह तय करना कि कब और किसके साथ बाहर जाना है, क्या खाना है, कैसे कपड़े पहनने हैं, किसे फ़ोन करना है, कितने बजे सोना है, क्या पढ़ना है, कैसे मज़ा करना है, क्या खरीदना है, कहाँ रहना है, वगैरह क्योंकि अगर आप ये सब काम आज़ादी से और खुद नहीं कर सकते, तो आप ऐसे इंसान बन जाएंगे जिसे झेलना मुश्किल होगा और जो दूसरों पर बोझ बन जाएगा।छोटा सा टेस्ट अगर आप यह बातें किसी को नहीं बताते हैं, तो आप एक दुखी, अकेले इंसान हैं जिसका कोई दोस्त नहीं है।यह समाचार उन लोगों को तक पहुँचें जिनकी आप परवाह करते हैं और आपको कभी पछतावा नहीं होगा! यह बात ध्यान में रखें।

11 अप्रैल से बंद आरओ प्लांट, ग्रामीणों ने सरपंच व ग्रामसेवक को सौंपा ज्ञापन

राजवीर सिंह मनाना

बड़ू । ग्राम पंचायत हुलढाणी के ग्राम भावसिया स्थित खातियों के मोहल्ले एवं मेघवालों के मोहल्ले में लगा आरओ प्लांट 11 अप्रैल से बंद होने के कारण ग्रामीणों को स्वच्छ पेयजल के लिए भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों का आरोप है कि शिकायत के बाद विभाग ट्यूबवेल की मोटर निकालकर ले गया, लेकिन आज तक उसे वापस नहीं लगाया गया, जिससे आरओ प्लांट पूरी तरह बंद पड़ा है।

समस्या के समाधान की मांग को लेकर सोमवार को ग्रामीणों ने सरपंच एवं ग्राम विकास अधिकारी (ग्रामसेवक) को ज्ञापन सौंपकर आरओ प्लांट को तत्काल चालू कराने और पेयजल व्यवस्था बहाल करने की मांग की। ग्रामीणों ने चेतावनी दी कि यदि शीघ्र कार्रवाई नहीं हुई तो वे उच्च अधिकारियों के समक्ष आंदोलन करने को मजबूर होंगे।

30 जून को जिले की 6 ग्राम पंचायतों में आयोजित होंगे ग्रामीण सेवा शिविर

रिपोर्टर - मुकेश मीना

खैरथल-तिजारा, 29 जून। राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं एवं सेवाओं का लाभ समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के उद्देश्य से जिले में 12 जून से 15 जुलाई 2026 तक *÷ग्रामीण सेवा शिविर-2026÷* का आयोजन किया जा रहा है। जिला कलक्टर ने बताया कि ग्रामीण सेवा शिविरों में राजस्व विभाग सहित कुल 22 विभागों की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी।

30 जून को मुण्डावर उपखंड की ग्राम पंचायत पीपली, बावद स्थित अटल सेवा केंद्र, किशनगढ़बास उपखंड की ग्राम पंचायत मोठुका स्थित अटल सेवा केंद्र, कोटकासिम उपखंड की ग्राम पंचायत बूढ़ीबावल स्थित राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, तिजारा उपखंड की ग्राम पंचायत लुहादेरा स्थित अटल सेवा केंद्र तथा टपूकड़ा उपखंड की ग्राम पंचायत मसीत स्थित अटल सेवा केंद्रों पर ग्रामीण सेवा शिविर आयोजित किए जाएंगे।

ग्रामीण सेवा शिविरों के माध्यम से आमजन की विभिन्न समस्याओं का त्वरित समाधान, राजस्व प्रकरणों का निस्तारण, पात्र व्यक्तियों को योजनाओं का लाभ प्रदान करना तथा विभिन्न विभागीय सेवाओं की प्रभावी पहुंच सुनिश्चित की जाएगी। जिला प्रशासन ने सभी विभागों को शिविरों के सफल संचालन हेतु आवश्यक तैयारियां समय पर पूर्ण करने के निर्देश दिए हैं।

मानसून की आहट के साथ खाद-बीज की दुकानों पर दिखाई देने लगी किसानों की भीड

वजीरपुर। क्षेत्र में मानसून के सक्रिय होने की संभावना के बीच खरीफ सीजन की तैयारियां जोर पकड़ने लगी हैं। बारिश की उम्मीद के साथ किसान अब खेतों में बुवाई की तैयारियों में जुट गए हैं। इसी के चलते सोमवार को क्षेत्र की खाद-बीज की दुकानों पर किसानों की भारी भीड़ देखने को मिली। सुबह से ही किसान उन्नत किस्म के बाजरा, मूंग, उड़द, तिल एवं अन्य खरीफ फसलों के बीजों के यूरिया और अन्य उर्वरकों की खरीदारी करते नजर आए।

बाजार में पूरे दिन किसानों की चहल-पहल बनी रही। कई दुकानों पर किसानों की लंबी कतारें लगी रहीं और दुकानदार भी लगातार खाद-बीज उपलब्ध कराने में व्यस्त दिखाई दिए। क्षेत्र के किसान मुनेश मीना ताराचंद मीना, हंसराम मीना, रिषीकेश मीना, रामनरेश आदि किसानों का कहना है कि मौसम विभाग द्वारा बारिश की संभावना जताए जाने के बाद उन्होंने बुवाई की तैयारियां तेज कर दी हैं, ताकि पहली अच्छी बारिश होते ही खेतों में बुवाई शुरू की जा सके।

खाद-बीज विक्रेताओं के अनुसार पिछले दो-तीन दिनों में कृषि सामग्री की मांग में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। विशेष रूप से उन्नत एवं प्रमाणित बीजों की खरीद अधिक हो रही है। कृषि विशेषज्ञों ने किसानों से प्रमाणित बीज खरीदने, संतुलित मात्रा में उर्वरकों का उपयोग करने तथा कृषि विभाग की अनुशंसाओं के अनुसार ही बुवाई करने की अपील की है।

बारिश की आस के साथ ग्रामीण अंचलों में खेती-किसानी की गतिविधियां तेज हो गई हैं और बाजारों में भी खरीफ सीजन की रौनक साफ दिखाई देने लगी है।

जिला कलेक्टर ने ली साप्ताहिक समीक्षा बैठक, लंबित प्रकरणों का शिविर के माध्यम से निस्तारण के निर्देश

रिपोर्टर - मुकेश मीना

खैरथल-तिजारा, 29 जून। जिला कलेक्टर अतुल प्रकाश की अध्यक्षता में सोमवार को जिला सचिवालय सभागार में आयोजित साप्ताहिक समीक्षा बैठक में विभिन्न विभागों की प्रगति की समीक्षा की गई। जिला कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि ग्रामीण एवं शहरी सेवा शिविरों के माध्यम से विभागीय लंबित प्रकरणों का प्राथमिकता के आधार पर शीघ्र एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित किया जाए।

बैठक के दौरान जिला कलेक्टर ने संपर्क पोर्टल पर लंबित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए सभी उपखंड अधिकारियों एवं ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों को निर्देश दिए कि कोई भी प्रकरण 30 दिन से अधिक लंबित नहीं रहना चाहिए तथा सभी प्रकरणों का गुणवत्ता पूर्ण निस्तारण सुनिश्चित किया जाए, ताकि आमजन को वास्तविक लाभ मिल सके।

पोलियो अभियान के तहत जिला कलेक्टर ने शिक्षा विभाग एवं महिला एवं बाल विकास विभाग को आपसी समन्वय के साथ प्रत्येक पात्र बच्चे तक पोलियो की खुराक पहुंचाने के निर्देश दिए। उन्होंने लंबित पेंशन सत्यापन प्रकरणों का शीघ्र निस्तारण कर पात्र लाभार्थियों को समय पर पेंशन का लाभ देने के निर्देश दिए।

उन्होंने चिकित्सा विभाग को आयुष्मान कार्ड ई-केवाईसी एवं लाडो प्रोत्साहन योजना की लंबित किस्तों के भुगतान में तेजी लाने के निर्देश दिए। वहीं शिक्षा विभाग को पालनहार प्रमाणपत्र तथा जिला रसद विभाग को एनएफएसए मैपिंग एवं ई-केवाईसी से जुड़े लंबित प्रकरणों का शिविरों के माध्यम से निस्तारण सुनिश्चित करने के लिए कहा, ताकि ग्रामीणों को बार-बार मुख्यालय के चक्कर नहीं लगाने पड़ें।

जिला कलेक्टर ने सभी उपखंड अधिकारियों को ग्रामीण एवं शहरी सेवा शिविरों की नियमित समीक्षा करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि प्रत्येक शिविर की व्यवस्थाओं, प्राप्त आवेदनों, उनके निस्तारण एवं विभागवार प्रगति की सतत मॉनिटरिंग सुनिश्चित की जाए। साथ ही शहरी सेवा शिविरों की प्रगति की भी नियमित समीक्षा करते हुए लंबित प्रकरणों का समयबद्ध निस्तारण कराया जाए। जिला कलेक्टर ने सभी

उपखंड अधिकारियों को शिविरों की प्रगति की निरंतर समीक्षा कर निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप कार्य सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

जिला कलेक्टर ने समाज कल्याण, महिला एवं बाल विकास, जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी, सार्वजनिक निर्माण सहित अन्य विभागों को भी शिविरों के माध्यम से लंबित प्रकरणों का निस्तारण कर योजनाओं का लाभ अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने के निर्देश दिए।

बैठक में अतिरिक्त जिला कलेक्टर शिवपाल जाट, उप अधीक्षक लालसिंह, सहायक निदेशक आयुर्वेद विभाग अजीत बाल्याण, अधीक्षण अभियंता सार्वजनिक निर्माण विभाग ओमप्रकाश किराड़, अधीक्षण अभियंता जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग धर्मवीर यादव, अधीक्षण अभियंता बिजली विभाग जेपी बैरवा, जिला रसद अधिकारी राकेश सोनी, उपनिदेशक सहकारिता विभाग वेद प्रकाश सैनी, उपायुक्त श्रम विभाग प्रज्ञा शर्मा सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे। जिले के सभी उपखंड अधिकारी वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से बैठक में जुड़े।

दौसा में जिला स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह आयोजित-विद्यालय का कायाकल्प करने वाले शिक्षक गिरिराज प्रसाद शर्मा हुए सम्मानित

दौसा -राज कुमार चतुर्वेदी

शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित जिला स्तरीय भामाशाह सम्मान समारोह में शिक्षा के क्षेत्र में अपना अमूल्य योगदान देने वाले दानदाताओं और भामाशाहों को सम्मानित किया गया। इसी कड़ी में राजस्थान शिक्षक संघ (राष्ट्रीय) जिला दौसा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष और आमटेडा निवासी श्री गिरिराज प्रसाद शर्मा को उनके अनुकरणीय सहयोग के लिए जिला स्तर पर विशेष रूप से सम्मानित किया गया। निजी आय से खर्च किए 1,11,111, संवारा स्कूल का स्वरूप प्रेरणादायी बन गया है।

अधिकारियों ने माला, साफा व दुपट्टा पहनाकर किया बहुमान

आज आयोजित हुए इस भव्य जिला स्तरीय समारोह में शिक्षा विभाग के आला अधिकारियों ने श्री शर्मा के इस पुनीत कार्य की सराहना की। कार्यक्रम में उपस्थित-

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी (CDEO), दौसा

जिला शिक्षा अधिकारी (प्रारंभिक शिक्षा)

जिला शिक्षा अधिकारी (माध्यमिक शिक्षा)

इन सभी अधिकारियों ने संयुक्त रूप से भामाशाह श्री गिरिराज प्रसाद शर्मा को माला, साफा और दुपट्टा पहनाकर, तथा सम्मान पत्र भेंट कर उनका भव्य बहुमान किया।

विभाग का संदेश- अधिकारियों ने कहा कि श्री शर्मा जैसे शिक्षक और भामाशाह समाज के लिए प्रेरणापुंज हैं, जो अपनी कर्मास्थली को सुंदर बनाने के लिए अपनी निजी आय से योगदान दे रहे हैं। ऐसे प्रयासों से सरकारी विद्यालयों के बुनियादी ढांचे में बड़ा सुधार देखने को मिल रहा है।

भामाशाह श्री गिरिराज प्रसाद शर्मा ने अपनी निजी आय से 1,11,111 (एक लाख ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह रुपये) की राशि राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, बने निवास (भांडारेज ब्लॉक, दौसा) के विकास के लिए समर्पित की। इस राशि से उन्होंने विद्यालय में माँ सरस्वती की प्राण-प्रतिष्ठा करवाई। सम्पूर्ण स्कूल भवन और प्रांगण की शानदार रंग-रोगन व पुताई का कार्य अपने व्यक्तिगत खर्च पर संपन्न करवाया।

उनके इस प्रयास से विद्यालय का पूरा परिवेश अत्यंत आकर्षक और

ग्रामीण सेवा शिविर में किसान हो रहे है लाभान्वित

तारबंदी योजना से सुरक्षित हुई फसलें, किसान विजय सैनी की बढ़ी आय

कृषि विभाग के मार्गदर्शन से मिला सरकारी अनुदान, क्षेत्र के किसानों के लिए बने प्रेरणा स्रोत

सवाई माधोपुर, 29 जून। राजस्थान सरकार के कृषि विभाग द्वारा संचालित तारबंदी योजना किसानों की फसलों को निराश्रित एवं जंगली पशुओं से सुरक्षित रखने में प्रभावी साबित हो रही है। योजना का लाभ लेकर ग्राम पंचायत नौगांव निवासी किसान विजय सैनी पुत्र हजारी सैनी ने अपने खेत की तारबंदी करवाई, जिससे उनकी फसलों को सुरक्षा मिलने के साथ-साथ उत्पादन एवं आय में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। किसान विजय सैनी ने बताया कि पूर्व में निराश्रित पशुओं एवं नीलगाय के कारण उनकी फसलों को बार-बार नुकसान होता था। फसलों की सुरक्षा के लिए रात-दिन खेत की रखवाली करनी पड़ती थी, जिससे समय, श्रम और आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता था। इसी दौरान कृषि पर्यवेक्षक रामेश्वर सैनी (नौगांव) एवं सहायक कृषि अधिकारी पिन्टू लाल मीना (गंगापुरसिटी) ने उन्हें कृषि विभाग की तारबंदी योजना की विस्तृत जानकारी दी। अधिकारियों के मार्गदर्शन में किसान ने योजना के लिए आवेदन किया। पात्रता के आधार पर विभाग से स्वीकृत मिलने के बाद खेत की चारों ओर मजबूत तारबंदी करवाई गई।तारबंदी के बाद फसलों को आवारा एवं जंगली पशुओं से सुरक्षा मिली, जिससे फसल हानि में उल्लेखनीय कमी आई। खेत की रखवाली का बोझ भी कम हुआ और उत्पादन बढ़ने से किसान की आय में सकारात्मक सुधार हुआ। विजय सैनी ने बताया कि यह योजना उनके लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुई है तथा वे अन्य किसानों से भी इस योजना का लाभ लेने का आग्रह करते हैं। अन्य किसान भी उठा

सकते हैं योजना का लाभ– कृषि विभाग के अनुसार राजस्थान के पात्र किसान, जिनके नाम कृषि भूमि दर्ज है तथा जो विभाग द्वारा निर्धारित शर्तों को पूरा करते हैं, वे इस योजना के लिए आवेदन कर सकते हैं। किसान आवश्यक दस्तावेजों के साथ राज किसान साथी पोर्टल के माध्यम से आवेदन कर सकते हैं। पात्र किसानों को योजना के प्रावधानों के अनुसार तारबंदी कार्य पर निर्धारित सीमा तक अनुदान उपलब्ध कराया जाता है। कृषि विभाग ने किसानों से अपील की है कि वे अपनी मेहनत की कमाई और फसलों की सुरक्षा के लिए तारबंदी योजना का अधिक से अधिक लाभ उठाएँ तथा किसी भी जानकारी के लिए अपने क्षेत्र के कृषि अधिकारियों से संपर्क करें। सहायक कृषि अधिकारी पिन्टू लाल मीना (पहाड़ी) ने बताया कि राजस्थान सरकार द्वारा कृषि विभाग के माध्यम से संचालित यह योजना बेहद लाभकारी और कारगर साबित हो रही है इसका लाभ लेने के लिए किसान के पास एक जगह पर 0.5 हैक्टेयर (2 बिघा) जमीन का होना आवश्यक है यदि एक किसान के पास जमीन नही है तो वो दूसरे किसानों को भी सम्लित कर सामूहिक रूप से आवेदन कर सकते है, जिन खसरो में तारबन्दी करवा रहे है उनका नक्शा ट्रेस पटवारी से लेना है, आधार कार्ड, जनाधारकार्ड एवं लघु सीमांत प्रमाण पत्र के साथ राज किसान साथी पोर्टल पर ऑनलाइन आवेदन कर सकते है। सहायक कृषि अधिकारी पिन्टू मीना पहाड़ी में बताया कि कृषि विभाग के अनुसार तारबंदी योजना के अंतर्गत सामान्य किसानों को लागत का 50 प्रतिशत अथवा अधिकतम 40 हजार रुपये तथा लघु एवं सीमांत किसानों को लागत का 60 प्रतिशत अथवा अधिकतम 48 हजार रुपये (जो भी कम हो) का अनुदान प्रदान किया जाता है। यदि 7 किसान मिलकर 5 हैक्टेयर (20 बिघा) में तारबन्दी करवाते हैं तो प्रति किसान 54 हजार रुपये तक का अनुदान देय है यह अनुदान निर्धारित मानकों के अनुसार अधिकतम 400 रनिंग मीटर तक की तारबंदी के लिए देय है।

माचाड़ी के नंगेंश्वर धाम में श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ का समापन, हवन-पूजन के साथ हुआ विशाल भंडारा

राजगढ़(अलवर) रामरतन मीणा। माचाड़ी- प्राचीन काल में अलवर जिले की राजधानी रहे माचाड़ी कस्बे में स्थित नगेंश्वर धाम आश्रम में आयोजित सात दिवसीय श्रीमद्भागवत सप्ताह ज्ञान यज्ञ का समापन हवन-पूजन एवं पूर्णाहुति के साथ श्रद्धापूर्वक संपन्न हुआ। समापन अवसर पर विशाल भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें दूर-दराज से आए हजारों श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण कर संत-महात्माओं का आशीर्वाद प्राप्त किया। भंडारे के दौरान माचाड़ी निवासी एवं जयपुर स्थित वरदान एम्पायर से जुड़े भामाशाह तरुण पांडेय ने संत-महात्माओं की भव्य विदाई कर सेवा-भाव का परिचय दिया।

समापन समारोह में आयोजित पददंगल कार्यक्रम में राम सिंह डोरोली एवं महेश पिनान ने लोकभजनों की शानदार प्रस्तुतियां दीं। ÷उड़ जा काला कागला...÷ तथा ÷आई रे आखातीज अगाड़ी ब्याह करेगा छोरी को...÷ जैसे लोकगीतों और भजनों ने श्रद्धालुओं को भाव-विभोर कर दिया। भजनों की मधुर प्रस्तुति पर श्रद्धालु झूम उठे और भक्तिमय वातावरण बन गया।

कार्यक्रम के दौरान मंच से संत-महात्माओं की सम्मानपूर्वक विदाई की गई तथा अतिथियों का भी भव्य स्वागत किया गया। श्रद्धालुओं ने श्रीमहंत माधव दास महाराज का पुष्पमालाओं से अभिनंदन किया। इस अवसर पर श्रीमहंत माधव दास महाराज,श्रीमहंत मोहनदास महाराज,ज्ञानदास महाराज एवं भागवताचार्य पंडित सचिदानंद महाराज ने उपस्थित श्रद्धालुओं को आशीर्वचन प्रदान किए। सात दिवसीय आयोजन की व्यवस्थाओं में भौंरंगी गौशाला के गौसेवकों, स्वयंसेवकों तथा महिला-पुरुषों ने सक्रिय सहयोग दिया। जयपुर, हरियाणा, फरीदाबाद, दिल्ली, अलवर और बल्लभगढ़ सहित विभिन्न स्थानों से पहुंचे श्रद्धालुओं ने कथा, हवन एवं भंडारे में भाग लेकर पुण्य लाभ अर्जित किया।

इस अवसर पर ललित मोहन पांडेय, तरुण पांडेय, कपिल पांडेय, संजय खंडेलवाल, संजय शर्मा, मनीष पटेल, पंडित अजय शर्मा, ओमप्रकाश पटेल, दिनेश वशिष्ठ, पंडित मधुसूदन शर्मा (बिहार),भामाशाह कैलाश चंद मीणा पाटन,लेखराज जांगिड़, श्रमजीवी पत्रकार संघ के तहसील उपाध्यक्ष एवं विभिन्न संगठनों के राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी नागपाल शर्मा सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन भावना सीनियर सेकेंडरी विद्यालय के संस्था प्रधान मनोहर लाल शर्मा ने किया। कार्यक्रम के अंत में भौंरंगी गौशाला मैंन कार्यकर्ता गौ सांसद पंडित अजय शर्मा ने बताया कि 10 मार्च फुलेरा दोज को निः शुल्क सर्वजातीय सामूहिक विवाह सम्मेलन का आयोजन पांडेय परिवार वरदान एम्पायर जयपुर द्वारा हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी भौंरंगी गौशाला राजगढ़ में 10 मार्च फुलेरा दूज पर निःशुल्क आयोजित किया जाएगा।

सफलता की कहानी- शहरी सेवा शिविर में भूपेन्द्र यादव को मौके पर मिला विवाह प्रमाण पत्र, दस्तावेजों में संशोधन की राह हुई आसान

बांदीकुई (राजकुमार चतुर्वेदी)

राज्य सरकार के मंशानुरूप आमजन को राहत देने और उनकी समस्याओं का त्वरित समाधान करने के लिए नगर पालिका कार्यालय बसवा में आयोजित %शहरी सेवा शिविर 2026% वरदान साबित हो रहे हैं। इस शिविर के माध्यम से एक ही छत के नीचे बिना किसी देरी के लोगों के आवश्यक कार्य पूरे किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में सोमवार को शिविर में एक दंपत्ति के चेहरे पर उस वक्त मुस्कान आ गई, जब उनका विवाह प्रमाण पत्र महज कुछ ही समय में बनकर उनके हाथ में आ गया।

सहायक प्रभारी ने मौके पर ही की त्वरित कार्यवाही

शिविर के दौरान कस्बे के निवासी श्री भूपेन्द्र यादव ने अपनी पत्नी के साथ उपस्थित होकर विवाह पंजीकरण हेतु आवेदन प्रस्तुत किया था। मामले की संवेदनशीलता और जरूरत को देखते हुए शिविर के सहायक प्रभारी व कनिष्ठ अभियंता (जेएन) श्री भोलूराम सैनी ने तुरंत प्रभाव से आवश्यक दस्तावेजों की जांच करवाई और त्वरित कार्यवाही करते हुए मौके पर ही विवाह प्रमाण पत्र जारी कर आवेदक को सौंप दिया।

जनाधार और आधार कार्ड में संशोधन की राह हुई आसान

विवाह प्रमाण पत्र प्राप्त होने के बाद लाभार्थी श्री भूपेन्द्र यादव ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए बताया कि इस प्रमाण पत्र की कमी के कारण उनकी पत्नी का नाम जनाधार कार्ड और आधार कार्ड

में दर्ज या संशोधित नहीं हो पा रहा था। अब प्रमाण पत्र मिल जाने से इन महत्वपूर्ण दस्तावेजों में नाम आसानी से जुड़ सकेगा, जिससे उन्हें राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न कल्याणकारी और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का लाभ सीधे और बिना किसी रुकावट के मिल सकेगा।

लाभार्थी ने जताया सरकार और प्रशासन का आभार

श्री यादव ने राज्य सरकार द्वारा चलाए जा रहे इन शहरी सेवा शिविरों की खुलकर सराहना की। उन्होंने कहा, ÷इस शिविर की बदौलत हमें सरकारी दफ्तरों के बार-बार चक्कर काटने से मुक्ति मिली है और हमारा काम तुरंत प्रभाव से मौके पर ही कर दिया गया।÷ राहत मिलने पर लाभार्थी ने राज्य सरकार एवं स्थानीय प्रशासन का सहृदय आभार और धन्यवाद ज्ञापित किया। शिविर में मौजूद अन्य नागरिकों ने भी प्रशासन की इस त्वरित और जन-हितैषी कार्यप्रणाली की प्रशंसा की।

मनुष्य के दुख का कारण हमारी असीमित इच्छाएं हैं- संत भास्कर भारद्वाज। पवित्र मनन दीप द्वारा सत्संग प्रवचन कार्यक्रम का हुआ आयोजन

(खैरथल तिजारा) पवित्र मनन दीप सत्संग सेवा संस्थान कोटकासिम द्वारा भूतेश्वर मंदिर में सत्संग प्रवचन कार्यक्रम का आयोजन किया गया ! इस दौरान प्रवचन करते हुए संत भास्कर भारद्वाज ने कहा आज हमारी तमन्नाएं बढ़ती जा रही है और हमारी असीमित इच्छाएं ही दुख का मुख्य कारण है !गुरुदेव ने आगे कहा हमें अधिक से अधिक मेहनत करनी चाहिए अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिए और बहुत सीमित इच्छाएं रखनी चाहिए तो जीवन में खुशियां आनी शुरू हो जाती है ! इस दौरान पवन उर्फ गोली प्रजापत और पवन योगी द्वारा सुंदर भजनों की प्रस्तुति दी गई !उन्होंने सभी लोगों से ध्यान कराया और ध्यान का महत्व बताया और कहां ध्यान करने से बड़ी से बड़ी समस्या समाप्त होती है हमें प्रभु का ध्यान अवश्य करना चाहिए !इस दौरान सत्संग परिवार सहित बड़ी संख्या में भक्तगण मौजूद रहे !

ग्रामीणों के लिए वरदान बना मुही का सेवा शिविर

एक ही छत के नीचे निपटे दर्जनों मामले, एसडीएम ने किया निरीक्षण

बांदीकुई (राजकुमार चतुर्वेदी) राज्य सरकार के मंशानुरूप आमजन की समस्याओं के त्वरित समाधान और जनकल्याणकारी योजनाओं का लाभ अंतिम छोर के व्यक्ति तक पहुंचाने के उद्देश्य से ग्राम पंचायत मुही में %ग्रामीण सेवा शिविर% का आयोजन किया गया। शिविर में उपखंड अधिकारी (एसडीएम) रवि कांत सिंह ने औचक निरीक्षण कर अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। यह शिविर प्रभारी व नायब तहसीलदार बाबू लाल मीणा और विकास अधिकारी बीडीओ हजारी लाल बैरवा की मौजूदगी में संपन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में ग्रामीणों की समस्याओं का मौके पर ही निस्तारण किया गया।

राजस्व से लेकर पानी-बिजली की समस्याओं का हुआ समाधान

शिविर के दौरान विभिन्न विभागों के अधिकारी और कर्मचारी एक ही छत के नीचे मौजूद रहे। इस दौरान राजस्व, पंचायती राज, जलदाय, विद्युत, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता, कृषि और चिकित्सा विभाग से जुड़े कई मामलों का मौके पर पंजीकरण कर उनका निपटारा किया गया।

मुख्य रूप से निस्तारित किए गए प्रकरण

राजस्व मामले- नामांतरण के 09, सीमाज्ञान के 07 और राजस्व अभिलेख रिकॉर्ड शुद्धि के 04 मामलों का निपटारा किया गया। कृषि व पशुपालन- फार्मर रजिस्ट्री के 03 प्रकरणों का निस्तारण हुआ। वहीं, मुख्यमंत्री मंगला पशु बीमा योजना के तहत 17 पशुपालकों को बीमा पॉलिसियों का वितरण किया गया।

पेयजल राहत- जलदाय विभाग द्वारा तत्परता दिखाते हुए हैंडपंप मरम्मत के 03 प्रकरणों का मौके पर ही समाधान किया गया।

अधिकारियों ने किया संवाद, ग्रामीणों ने जताई प्रसन्नता

शिविर में आए ग्रामीणों से अधिकारियों ने सीधा संवाद कर उनकी परिवेदनाएं सुनीं और संबंधित विभागों को त्वरित कार्यवाही के निर्देश दिए। साथ ही ग्रामीणों को जागरूक करते हुए सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं का अधिक से अधिक लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया गया। गांव के ही एक लाभार्थी ने खुशी जाहिर करते हुए कहा,छोटे-मोटे सरकारी कामों के लिए हमें दफ्तरों के चक्कर काटने पड़ते थे, लेकिन इस शिविर की बदौलत हमारे काम गांव में ही और एक ही दिन में हो गए। शिविर की सफलता को देखते हुए ग्रामीणों ने राज्य सरकार की इस अनूठी पहल की जमकर सराहना की।

जन जागृति संस्थान में वार्षिकोत्सव एवं दिव्यांग जागरूकता कार्यक्रम का हुआ आयोजन

संजय बागड़ी (बहरोड़) कस्बे में जन जागृति संस्थान द्वारा संचालित शरबती देवी दिव्यांग सशक्तिकरण केंद्र में रविवार को वार्षिक उत्सव एवं दिव्यांग जागरूकता कार्यक्रम का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य अतिथि प्रतिमा शुक्ला (अध्यक्ष, आरडब्ल्यूए उपवन सोसायटी, बहरोड़) एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों द्वारा माँ सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया गया।

कार्यक्रम के दौरान दिव्यांग बच्चों ने अपनी अद्भुत प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए गायन, नृत्य एवं विभिन्न रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दीं। दिव्यांगों द्वारा हस्तनिर्मित सजावटी सामान की स्टॉल एवं उनके द्वारा पेश की गई संगीत की प्रस्तुतियाँ सभी के आकर्षण का केंद्र रही। कार्यक्रम में दिव्यागजनो ने बेहतरीन सांस्कृतिक प्रस्तुतियां देकर दर्शकों की तालियों बटोरी।

कार्यक्रम का सबसे आकर्षक केंद्र अनिकेत द्वारा प्रस्तुत शिव तांडव नृत्य रहा। उनकी जोशीली एवं भावपूर्ण प्रस्तुति ने पूरे सभागार को मंत्रमुग्ध कर दिया। वहीं संस्था के सभी बच्चों द्वारा शिव भजन पर प्रस्तुत सामूहिक नृत्य ने ऐसा आध्यात्मिक वातावरण बनाया कि सभी आगंतुक भाव-विभोर हो उठे और बच्चों की प्रतिभा की मुक्त कंठ से सराहना करते हुए देर तक तालियाँ बजाते रहे।

इसी क्रम में राकेश द्वारा प्रस्तुत शारीरिक कौशल का रोमांचक प्रदर्शन भी कार्यक्रम का विशेष आकर्षण रहा। उनके हैरतअंगेज करतबों ने उपस्थित लोगों को दांतों तले उंगली दबाने पर मजबूर कर दिया। दर्शकों ने जोरदार तालियों से उनका उत्साहवर्धन किया।

कार्यक्रम के समापन अवसर पर छोटू राम ने अपने मधुर भजनों की प्रस्तुति देकर पूरे वातावरण को भक्तिमय बना दिया। इसके पश्चात राजेश स्वामी ने भी अपने सुमधुर भजनों से सभी को भावविभोर कर दिया।

अपने संबोधन में मुख्य अतिथि प्रतिमा शुक्ला ने कहा कि दिव्यांग बच्चों में असीम प्रतिभा छुपी होती है। यदि उन्हें उचित अवसर, प्रशिक्षण और समाज का सहयोग मिले तो वे हर क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं। उन्होंने जन जागृति संस्थान एवं शरबती देवी दिव्यांग सशक्तिकरण केंद्र द्वारा दिव्यांग बच्चों के सर्वांगीण विकास एवं आत्मनिर्भरता के लिए किए जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए हर संभव सहयोग का आश्वासन दिया। कार्यक्रम के अंत में सभी मुख्य अतिथियों, विशिष्ट अतिथियों एवं सहयोगी भामाशाहों का स्मृति चिन्ह भेंट कर सम्मान किया गया तथा धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस अवसर पर डॉ. दीपिका यादव, डॉ. सूर्यप्रकाश यादव (सोनी हॉस्पिटल, नीमराना), वीरेंद्रनाथ भारद्वाज (डायरेक्टर, हुड्डुइज्ञ यूनिवर्सिटी, नीमराना), जयपाल (उपसरपंच, महाराजवास), आशीष रोहिल्ला (मैनेजर, एक्सिस बैंक), हीरालाल थानेदार, डॉ. रामकिशोर, अनिल सिसोदिया, महेश खत्री, धर्मराज, सीताराम गुर्जर, उपेंद्र गुप्ता (ऑल इंडिया यूको बैंक दिव्यांगजन इंप्लॉई वेलफेयर एसोसिएशन), नन्द किशोर (अध्यापक), भूप सिंह (अध्यापक), निरंजन यादव, राखी सैन, किरण (सुरक्षा सखी), संदीप सोनी, खींव राज वर्मा, इंद्राज सैनी, मुकेश सैनी, जितेंद्र, राजेंद्र मीणा, राकेश, भूरा सिंह, राजेश जांगल, सुभाष मक्कड़, महेश कसाना, यादराम, अशोक मीणा एवं पीयूष गोस्वामी सहित अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में संस्था अध्यक्ष रवि कुमार, उपाध्यक्ष मांगेराम, कोषाध्यक्ष मानसिंह, विशेष शिक्षक महेश, राकेश, मुकेश, पूनम एवं निवेदिता, संगीत शिक्षक आशाराम, सुषमा एवं संगीता सहित सामर्थ्य दिव्यांग जन कल्याण संस्थान से रिंकू यादव,राकेश शर्मा एवं शिव कुमार सहित बड़ी संख्या में अभिभावक, भामाशाह, समाजसेवी एवं क्षेत्रवासी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम का सफल संचालन सौहार्दपूर्ण वातावरण में हुआ तथा अंत में सभी अतिथियों, अभिभावकों एवं सहयोगियों के प्रति संस्था की ओर से आभार व्यक्त किया गया।

दिव्यांग रिंकू यादव ने 12वीं बार रक्तदान कर दिया बेहतरीन संदेश

संजय बागड़ी (बहरोड़) क्षेत्र के गांव कांकर छाजा निवासी दिव्यांग रिंकू यादव ने अपने जीवन का 12 वा रक्तदान कर समाज के लिए एक बेहद प्रेरणादायक और सराहनीय कार्य करते हुए बेहतरीन सामाजिक संदेश दिया है जिसकी क्षेत्र में काफी सराहना की जा रही है। शारीरिक बाधाओं (दिव्यांगता) के बावजूद उनका यह जज्बा साबित करता है कि मानवता की सेवा के लिए केवल एक मजबूत इच्छाशक्ति की जरूरत होती है।

दिव्यांग लोगों के हितों ओर उनके हक की आवाज उठाने में अग्रणी रिंकू यादव सच्चे समाज सेवी के रूप में हाल ही में चर्चा में आए हैं। दिव्यांग अध्यक्ष रिंकू यादव जैसे रक्तवीर समाज के उन तमाम स्वस्थ लोगों के लिए एक मिसाल बन गई हैं, जो अक्सर रक्तदान करने से कतराते हैं।

11 केवी लाइन और बिजली आपूर्ति बाधित होने से गौशाला में पेयजल संकट, बिजली विभाग से शीघ्र समाधान की मांग

कई बार शिकायत के बावजूद नहीं हुआ समाधान, गोवंश की देखभाल पर मंडराया संकट

रिपोर्टर - मुकेश मीना

मुण्डावर/खैरथल-तिजारा, 28 जून। तहसील मुण्डावर के चिरूनी स्थित बाबा श्री मनीराम सामूहिक गौशाला आश्रम संस्था ने बिजली विभाग को प्रेस नोट जारी कर गौशाला में उत्पन्न गंभीर विद्युत समस्या के समाधान की मांग की है।

प्रेस नोट के अनुसार, गौशाला के बाड़े के ऊपर से गुजर रही 11 केवी विद्युत लाइन को अन्यत्र स्थानांतरित कराने की मांग लंबे समय से की जा रही है। इस संबंध में विभाग के अधिकारियों को कई बार अवगत कराया जा चुका है, लेकिन अब तक कोई कार्रवाई नहीं हुई है।

गौशाला प्रबंधन ने बताया कि पिछले कई दिनों से गौशाला की बिजली आपूर्ति भी बाधित है, जिससे पानी की मोटर बंद पड़ी हुई है। इसके कारण गोवंश को बाहर से पानी लाकर पिलाना पड़ रहा है, जिससे गौशाला को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। प्रबंधन के अनुसार, इस समस्या को लेकर 26 जून 2026 को विभाग के टोल फ्री नंबर पर शिकायत (कम्प्लेंट संख्या 2116470003828) भी दर्ज कराई गई थी, लेकिन 28 जून तक भी बिजली आपूर्ति बहाल नहीं की गई। विभाग की ओर से शिकायत के निस्तारण का आश्वासन दिया गया, लेकिन स्थिति यथावत बनी हुई है। गौशाला समिति ने बिजली विभाग से मांग की है कि गोवंश के हित को ध्यान में रखते हुए जल्द से जल्द बिजली आपूर्ति सुचारु कराई जाए तथा 11 केवी लाइन को सुरक्षित स्थान पर स्थानांतरित करने की कार्रवाई की जाए, ताकि भविष्य में किसी प्रकार की दुर्घटना की आशंका न रहे।

केमिकल युक्त अपशिष्ट खाने से 21 गायों की मौत

घटना को लेकर भीम आर्मी कार्यकर्ताओं ने किया धरना प्रदर्शन

संजय बागड़ी (शाहजहापुर) कस्बे मे कमिकल युक्त अपशिष्ट पदार्थ खाने से घुमन्तु पशु पालको की 21 गायों की मौत हो गई। जिसके बाद क्षेत्र के लोगों में रोष व्याप्त है। इधर घटना से आक्रोशित पशुपालकों के साथ ही भीम आर्मी के प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेंद्र मेहरा के नेतृत्व मे एसडीएम ऑफिस के सामने धरना प्रदर्शन किया जा रहा है। लेकिन ताजुब्ब की बात यह हे कि घटना को काफी समय व्यतीत होने के बावजूद भी शासन प्रशासन ने अभी तक कोई ठोस कदम नही उठाया है। इधर गो पालको का कहना है कि अगर हमे जल्द न्याय नही मिला तो हम अपने सभी पशुओ के साथ मंगलवार सुबह उपखंड कार्यालय पहुंचेंगे। इस मौके सुरेंद्र मेहरा, एड.रविंद्र सांवरिया भीम आर्मी जिला अध्यक्ष कोट पुतली बहरोड, पवन पोनी,समाजसेवी लाजपत मुंडनवाडा कलां, सिकन्दर कटारिया बहरोड ब्लॉक अध्यक्ष, लखन वाल्मीकि, अवदेश कुमार, मुकेश गोठवाल भीम आर्मी जिला अध्यक्ष कोट पुतली बहरोड, जॉनी कुमार ब्लॉक अध्यक्ष नीमराणा आदि भीम आर्मी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

नोएडा में 16 जुलाई को निकलेगी भगवान जगन्नाथ की भव्य रथ यात्रा 50 हजार श्रद्धालुओं के पहुंचने की उम्मीद

श्री रत्न क्षेत्र मंदिर में रथ यात्रा महोत्सव की तैयारियां अंतिम चरण में, 500 स्वयंसेवक संभालेंगे व्यवस्था

सेक्टर-121 स्थित श्री रत्न क्षेत्र भगवान जगन्नाथ मंदिर में आयोजित होने वाले 17वें वार्षिक रथ यात्रा महोत्सव की तैयारियां अंतिम चरण में पहुंच गई हैं। श्री जगन्नाथ समिति के तत्वावधान में आयोजित इस सामाजिक, धार्मिक, आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महोत्सव में लगभग 50 हजार श्रद्धालुओं के शामिल होने की संभावना जताई गई है। दिल्ली-राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र सहित विभिन्न स्थानों से आने वाले श्रद्धालु भगवान जगन्नाथ, भगवान बलभद्र और देवी सुभद्रा के दर्शन कर धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेंगे।

समिति के अध्यक्ष प्रमोद बहल ने बताया कि महोत्सव के सफल आयोजन के लिए व्यापक तैयारियां की गई हैं। मंदिर परिसर का रंग-रोगन और सौंदर्यीकरण कर उसे आकर्षक स्वरूप दिया जा रहा है, जिससे श्रद्धालुओं को बेहतर वातावरण मिल सके। उन्होंने बताया कि उत्सव का शुभारंभ 29 जून को देव स्नान पूर्णिमा से होगा। इसके बाद 14 जुलाई को नेत्रोत्सव और नवयौवन दर्शन, 16 जुलाई को दोपहर 3÷30 बजे रथ यात्रा श्री जगन्नाथ मंदिर, सेक्टर-121 से प्रारंभ होकर बाबा बालकनाथ मंदिर, सेक्टर-71 तक पहुंचेगी। 24 जुलाई को बहुदा यात्रा, 25 जुलाई को सुना वेश और 27 जुलाई को नीलाद्रि बीजे का आयोजन पारंपरिक वैदिक विधि-विधान के अनुसार किया जाएगा।

प्रमोद बहल ने बताया कि 18 फुट ऊंचे और छह पहियों वाले रथ का निर्माण कार्य अंतिम चरण में है। यात्रा के दौरान सुरक्षा, यातायात, अनुशासन और श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए समिति की कार्यकारिणी के साथ लगभग 500 स्वयंसेवकों की तैनाती की जाएगी। कार्यक्रमों का सीधा प्रसारण ग्रेट पोस्ट समाचार और आरम्भ दूरदर्शन माध्यम पर किया जाएगा। इस वर्ष दीपक सिंघल मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होकर भगवान जगन्नाथ की पारंपरिक छेरा पहरा रस्म निभाएंगे। रथ यात्रा महोत्सव के दौरान सांस्कृतिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाएंगे। मंदिर प्रबंधन समिति ने श्रद्धालुओं से अधिक से अधिक संख्या में महोत्सव में भाग लेने की अपील की है। समिति के अनुसार यह आयोजन धार्मिक आस्था, सांस्कृतिक विरासत और सामाजिक समरसता का संदेश देने वाला प्रमुख पर्व है, जिसे प्रत्येक वर्ष उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है।

सोशल मीडिया पर धार्मिक टिप्पणियों का विवाद, सिख संगठनों ने निष्पक्ष जांच और कड़ी कार्रवाई की मांग उठाई

सिख समुदाय के प्रतिनिधियों और सामाजिक कार्यकर्ताओं ने गाजियाबाद में सोशल मीडिया पोस्ट से जुड़े आरोपों की जांच की मांग की है। बताया जा रहा है कि इन पोस्ट से धार्मिक भावनाएं आहत हुईं और इनमें सिख धर्म, गुरुओं, सिख परंपराओं, पगड़ी और सिख महिलाओं के बारे में अपमानजनक बातें कही गईं, साथ ही हिंदू-सिख भाईचारे को भी नुकसान पहुँचाने की कोशिश की गई। पंजाब के मोहाली निवासी शिकायतकर्ता भगत सिंह दोआबी (उर्फ़ विक्रमजीत सिंह) द्वारा तैयार की गई औपचारिक शिकायत में कुछ खास सोशल मीडिया अकाउंट्स और उनसे जुड़े लोगों पर गंभीर आरोप लगाए गए हैं। शिकायतकर्ता का आरोप है कि इन पोस्ट में सिख धर्म, गुरु ग्रंथ साहिब से जुड़ी परंपराओं, पगड़ी और सिख महिलाओं को निशाना बनाते हुए अभद्र और भड़काऊ बातें कही गईं। इस मामले में, सिख समुदाय के विभिन्न प्रतिनिधियों और पदाधिकारियों ने निष्पक्ष जांच और दोषियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की मांग की है। शिकायत का समर्थन करने वाले प्रमुख लोगों में भगत सिंह विक्रमजीत सिंह, जसविंदर सिंह खालसा (ब्लू फोर्स, दिल्ली), हरपाल सिंह, अवतार सिंह लकी, रशपाल सिंह, सुनप्रीत सिंह, तजिंदर सिंह, राजीव सिंह खालसा, यशपाल सिंह, लकी सिंह खालसा, लवली सिंह और सरबजोत सिंह शामिल हैं।

सिख प्रतिनिधिमंडल को एक हिंदू संगठन की %आस्था मां% और हिंदू रक्षा दल के प्रमुख पिंकी भैया का भी खुला समर्थन मिला। शिकायतकर्ताओं का कहना है कि उनके पास इस मामले से जुड़ी वीडियो और ऑडियो रिकॉर्डिंग हैं, जिन्हें जांच एजेंसियों को सौंपा जाएगा। उनका आरोप है कि इस सामग्री में धार्मिक मान्यताओं के बारे में अपमानजनक बातें, धमकी भरे बयान और ऐसे लाइव-स्ट्रीम वीडियो शामिल हैं जो सांप्रदायिक सद्भाव को नुकसान पहुँचाते हैं। सूत्रों के अनुसार, शिकायत में यह भी आरोप लगाया गया है कि कुछ सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर नकली पहचान बनाकर हिंदू और सिख समुदायों के बीच फूट डालने की कोशिश की गई। शिकायतकर्ताओं का मानना है कि ऐसी गतिविधियों का मकसद दोनों समुदायों के बीच लंबे समय से चले आ रहे भाईचारे और सामाजिक सद्भाव को कमजोर करना हो सकता है। आशंका है कि इसमें खालिस्तान-समर्थक सोच वाले लोग शामिल हो सकते हैं और उन्हें बाहरी स्रोतों से फंडिंग मिल रही हो सकती है। प्रशासन से इन आरोपों की जांच करने की मांग की गई है। खास तौर पर, शिकायतकर्ताओं–मोहाली के भगत सिंह दोआबी (उर्फ विक्रमजीत सिंह) और दिल्ली के जसविंदर सिंह खालसा (ब्लू फोर्स–ने पुलिस को बजरिया के होटल आकाश दीप में आरोपी का पता लगाने में मदद की। हालांकि, पुलिस और सिख टीम के पहुंचने से ठीक पहले आरोपी अपनी एक महिला साथी के साथ जल्दबाजी में वहां से भाग गया। उसके कमरे (कमरा नंबर 220) से मिली और बाद में पुलिस द्वारा ज़ब्त की गई चीज़ों में दो वाई-फाई डोंगल, लाइटिंग का सामान, तिलक और चावल की रस्मों का सामान और एक मोटरसाइकिल (पीबी 10 के जी 9810) शामिल हैं। इस संदर्भ में, गाजियाबाद की कुछ गुरुद्वारा कमेटियों से जुड़े लोगों ने निष्पक्ष जांच की मांग की है। उनका कहना है कि किसी भी धर्म, गुरु, धार्मिक ग्रंथ या समुदाय के खिलाफ अपमानजनक भाषा का इस्तेमाल सामाजिक सद्भाव के लिए नुकसानदेह है। उन्होंने प्रशासन से तथ्यों की पुष्टि करने और उचित कार्रवाई करने का आग्रह किया है। इस मुद्दे पर हाल ही में नोएडा स्थित सुदर्शन न्यूज़ चैनल के स्टूडियो में ÷हिंदू-सिख एकता और सामाजिक सद्भाव÷ पर एक विशेष चर्चा आयोजित की गई थी। सुरेश चव्हाणके द्वारा होस्ट की गई इस चर्चा में समाज के विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया। चर्चा में हिंदू-सिख भाईचारे को मजबूत करने, सोशल मीडिया पर गुमराह करने वाले और भड़काऊ कंटेंट के प्रति सतर्क रहने और किसी भी विवादित संदेश की सूचना कानून-व्यवस्था बनाए रखने के लिए जिम्मेदार अधिकारियों को देने पर जोर दिया गया। शिकायतकर्ताओं का कहना है कि उनका मकसद किसी खास व्यक्ति को निशाना बनाना नहीं है, बल्कि धार्मिक सद्भाव, कानून-व्यवस्था और हिंदुओं व सिखों के बीच भाईचारे के सामाजिक बंधन की रक्षा करना है। उन्होंने प्रशासन से निष्पक्ष जांच करके सच्चाई सामने लाने और दोषी पाए जाने वाले किसी भी व्यक्ति के खिलाफ कानूनी कार्रवाई करने का अनुरोध किया है। गौरतलब है कि इस मामले में सभी आरोप शिकायतकर्ता पक्ष के दावों पर आधारित हैं। आरोपों की गंभीरता को देखते हुए मामला दर्ज करने के बाद, पुलिस ने चेतन शर्मा की तलाश शुरू कर दी है।

गाजियाबाद में सोशल मीडिया पर कथित धार्मिक टिप्पणियों पर सिख संगठनों ने दर्ज कराई शिकायत | हिन्दू-सिख भाईचारे को कमजोर करने के आरोपों पर कार्रवाई की मांग | गाज़ियाबाद और पंजाब के सिख प्रतिनिधियों ने उठाई अपनी आवाज़

स्वामी,मुद्रक,प्रकाशक हरिओम शर्मा के लिए श्रीराम ऑफसेट 6, शॉपिंग सेन्टर, माधोविलास के सामने, जोरावर सिंह गेट के पास, आमेर रोड, जयपुर - 302002 (राज.) से मुद्रित, प्लाट नम्बर 10 माँ भवानी विस्तार नगर , विजयपुरा, आगरा रोड़ पुरानी जयपुर राज. 302031 से प्रकाशित । संपादक - हरिओम शर्मा, मो. 9362862449,8058314720, Mail- tisriaankhkijwala@gmail.com